मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका, श्रीकृष्ण सं.५२५०, वि.सं. २०८१, आश्विन-कार्तिक (अक्टूबर २०२४ ई.) वर्ष ०८, अंक १०

मूल्य १०/-

मानमन्दिर कला
अकादमी द्वारा
प्रस्तुत नाटिका
'श्री चैतन्य महाप्रभु
लीला' के दृश्य

अनुक्रमणिका

विषय- सूची — पृष्ठ- संख्या

१ श्रीब्रज-परिक्रमा से अक्षम्य-अपराधों का शमन.....०५
२ अनुपम सुरम्य-सुशोभनीय 'श्रीबरसाना'.....०७
३ श्रीगह्वरवन का स्वरूप.....०९
४ वास्तविक बरसाना.....१३
५ सबसे सरस साधन व परम मन्त्र 'राधा' नाम.....१५
६ निष्काम 'कथा-कीर्तन' के प्रेरणा स्रोत 'बाबाश्री'.....२०
७ अभय व अकिञ्चन विद्यार्थी 'बाबाश्री'.....२३
८ संकीर्तन-संप्रेरक रसावतार 'श्रीमच्चैतन्य महाप्रभुजी'.....२४
९ श्रीमानमन्दिर के जीर्णोद्धार कार्य में सेवा करने वाले दानदाताओं की सूची.२९
१० श्रीराधारानी वार्षिक ब्रजयात्रा २०२४ (पर्चा) ३०,३१
११ गौ सेवा में आवश्यक सावधानियाँ.....३२
१२ श्रीगौ भक्तमाल कथा महोत्सव (३ अक्टूबर से ११ अक्टूबर तक).....३४

INSTAAL करें ---
PLAY STORE से-----
MAANINI APP
बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

।। राधे किशोरी दया करो ।।
हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्यो ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें। हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है।

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**, प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा** (उ.प्र.)
mob. **राधाकांत शास्त्री** .....9927338666, Website :www.maanmandir.org, (E-mail :info@maanmandir.org)

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ। जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।** (श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता।

प्रकाशकीय

'ब्रजभूमि' भारतीय जनमानस के आकर्षण का केन्द्र रही है क्योंकि भारत की संस्कृति का यह मूल आधार है । भगवान् श्रीकृष्णावतरण-क्षेत्र व लीलास्थली होने से करोड़ों भक्तों की आस्था भी यहाँ से जुड़ी है, तभी तो भारतवर्ष के ही नहीं अपितु सारे संसार से श्रद्धालु यहाँ आते हैं, दर्शन करते हैं व इस पवित्र भूमि की परिक्रमा करते हैं । परिक्रमा तो जगत्-पिता ब्रह्मा ने भी गौवत्स एवं ग्वालबाल-हरण के पाप से निवृत्ति के लिए की थी और वे निष्पाप हुए । 'ब्रजरज' का सेवन आज के बड़े से बड़े पापात्माओं को भी निर्मल बनाने वाला है । ऐसी महिमा किसी अन्य पुण्य कार्यों में नहीं है, तभी तो बड़े-बड़े संत-महन्त, राजा-महाराजा अपना कुल, वैभव, धनधान्य छोड़कर यहाँ की रज का आश्रय लेते हैं परन्तु कालक्रम से लुप्तप्रायः होता हुआ ब्रज का स्वरूप यथा समय संत-महात्माओं द्वारा प्रकट होता रहा है ।

श्रीचैतन्यमहाप्रभु, श्रीवज्रनाभजी, श्रीनारायणभट्टजी इत्यादि भगवत्स्वरूप महान् विभूतियों ने अवतार लेकर ब्रज-वसुन्धरा की विलुप्त लीलास्थलियों को पुनः प्रकट किया, बचाया परन्तु कलिकाल जैसे सब कुछ निगल ही जायेगा । बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ, आधुनिक सुख-सुविधाएँ तथा हमारी महत्वाकांक्षाओं ने स्वरूप को और भी विकृत कर दिया; फिर भी सनातन नाम वाली यहाँ की संस्कृति अपने नाम से भ्रष्ट कैसे हो सकती है । 'भगवान्' महापुरुषों के रूप में अवतरित होकर जीवों के कल्याणार्थ उसे सदा जीवित रखते हैं । ऐसे ही परमपुरुष विरक्त संत श्रद्धेय 'श्रीरमेशबाबाजी' जो प्रयाग की पावनभूमि में अवतरित हो बाल्यकाल से ही ब्रजाराधन का स्वप्न देखते हुए वैराग्य ग्रहण कर श्रीधाम 'बरसाना' के ब्रह्माचल पर्वत पर मानिनी श्रीराधा के तत्कालीन खण्डहर भवन 'श्रीमानमन्दिर' में रहे । उस समय यह स्थल चोर-डाकुओं का अड्डा था परन्तु महापुरुष अपनी पावन सन्निधि से जनमानस को तो पवित्र करते ही हैं, साथ ही क्षेत्र के भौम स्वरूप को भी सजाते-सँवारते हैं, वही किया परमपूज्य श्रीरमेशबाबाजी ने । लुप्त प्रायः होते हुए ब्रज के स्वरूप को उन्होंने पिछले ७० वर्षों के अथक् प्रयास से बचाया । ब्रज-संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक (बाबाश्री) ने परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य आराधन-शक्ति से सहजतापूर्वक संपादित किये । विगत् सत्तर वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस श्रीधाम-निष्ठा की सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं । ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं । असंख्य शरणागत जन आपके परम मंगलमय सान्निध्य से परम पवित्र हो रहे हैं । आपके विषय में श्रद्धालुजनों के विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं; आपके लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय । आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन व सत्संग-वाणी के श्रवण-मनन से ही सम्भव है । आपकी अनुपम कृतियाँ – **श्रीरसिया रसेश्वरी**, **स्वर वंशी के शब्द नूपुर के**, **ब्रजभावमालिका (बरसाना)**, **भक्तद्वय चरित्र** इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं । आपका 'सत्संग-वचनामृत' साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल है । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन अध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केन्द्र बन गयी; सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं । ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है । प्रस्तुत पत्रिका में आपके द्वारा कथित 'श्रीबरसानाधाम-महिमा' इत्यादि के सत्संग संकलित हैं । इस वर्ष 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' १५ अक्टूबर से प्रारम्भ होकर १९ नवम्बर तक (३६ दिन) जन-जन को ब्रजरस से अभिसिंचित करती हुई सुसम्पन्न होगी ।

कार्यकारी अध्यक्ष

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान

श्रीब्रज-परिक्रमा से अक्षम्य-अपराधों का शमन

श्रीराधारानी ब्रजयात्रा में हुए बाबाश्री के सत्संग (बरसाना पड़ाव '२४ अक्टूबर १९९६') से संकलित

ब्रजयात्रा क्यों की जाती है, इसका प्रारम्भ कैसे हुआ ? इस स्थिति में यह जानना आवश्यक है कि ब्रजभूमि अनादि है । जैसे - संसार में सृष्टि और प्रलय होता है, प्रलय में सभी चीजें नष्ट हो जाती हैं; इस बात को विज्ञान भी मानता है कि बड़े-बड़े ब्रह्माण्ड ऊपर से टूटकर गिरते हैं और अनन्त शून्य में लीन हो जाते हैं । हर वस्तु की सृष्टि और प्रलय का समय होता है किन्तु ब्रजभूमि सृष्टि और प्रलय से अलग वस्तु है, जिसका कभी नाश नहीं होता है । इसीलिए ब्रजभूमि की अनुपम महिमा है । सृष्टि के विषय में बहुत अधिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि समय कम है परन्तु थोड़ा-सा समझ लीजिये । तीन प्रकार के कल्प होते हैं – ब्राह्म कल्प, वाराह कल्प और पाद्म कल्प । यह सृष्टि के विषय में शास्त्रीय मत है । ब्राह्म कल्प में जब सृष्टि होती है तो पृथ्वी कैसे बनती है ? मधु-कैटभ को भगवान् मारते हैं । सृष्टि के बनने के पहले ही जब भगवान् सोते रहते हैं, उस समय ये दोनों दैत्य भगवान् के कान के मैल से उत्पन्न होते हैं । भगवान् ने मधु-कैटभ का वध किया । ये इतने बड़े असुर थे कि जब भगवान् ने इनको मारा तो उनका मेद इतना बड़ा था कि उस मेद के बहने से ही पृथ्वी बनी और उसका नाम पड़ा 'मेदिनी' । यह ब्राह्म कल्प की घटना है । उसके बाद पृथ्वी का दुबारा प्राकट्य होता है वाराह कल्प में । इस कल्प में भगवान् शूकर अवतार धारण करते हैं क्योंकि दैत्य हिरण्याक्ष पृथ्वी को चुराकर रसातल में ले गया था । उस दैत्य का वध करके शूकर रूप धारण करके भगवान् अपने दाँतों की नोक पर पृथ्वी को रखकर लाये । वाराह कल्प में पृथ्वी के उद्धार की यह कथा है । पाद्म कल्प में भगवान् नारायण के नाभि-कमल से ब्रह्माजी प्रकट हुए और कमल पर बैठे-बैठे ही उन्होंने चौदह लोकों की रचना की । उससे भी पृथ्वी का निर्माण हुआ । इन तीनों कल्पों में पृथ्वी का प्राकट्य होता है । इन तीनों कल्पों की तुलना में 'ब्रजभूमि' को देखिये तो उससे आप समझ जायेंगे कि यह 'ब्रजभूमि' अनादि और शाश्वत है, इसका प्रलय नहीं है । ब्राह्म कल्प में जब भगवान् ने मधु को मारा था, तब भी 'ब्रजभूमि' थी, जहाँ भगवान् ने मधु को मारा, उसी आधार पर उसका नाम मधुवन व मधुरा तथा क्रमशः मथुरा नाम रचना की गयी अर्थात् उस समय भी 'ब्रजभूमि' थी । इसके बाद जब वाराह कल्प में भगवान् रसातल से पृथ्वी का उद्धार करके लाये तब उस (पृथ्वी) ने ऊपर आकर देखा कि बाहर तो बहुत से वृक्ष-लताएँ हैं तो उसको बड़ा ही आश्चर्य हुआ और पृथ्वी ने भगवान् से पूछा – 'प्रभो ! ये वृक्ष-लतायें कहाँ से खड़े हैं ? मैं तो पानी के नीचे थी ।' वराह भगवान् ने कहा – 'हे देवि ! यह मेरा निज धाम है, यह मेरी प्यारी ब्रजभूमि है । यह तुम्हारे ऊपर स्थित नहीं है । तुम ऐसा मत सोचो कि ब्रजभूमि मेरे ऊपर आधारित है ।' इसके बाद जब पाद्म कल्प आया तो मथुरा में 'गतश्रम नारायण' नामक स्थल है, वहाँ पर आदि नारायण भगवान् ने विश्राम किया था । इससे पता चलता है कि 'ब्रजभूमि' तब भी थी । ब्रजभूमि अनादि है और इसका कभी विनाश नहीं होता है । रसिकों ने भी कहा है –

"वृन्दावन की शोभा देखत मेरे नैन सिरात । कुञ्ज निकुंज पुंज सुख बरसत हरषत सबके गात ॥
फणि पर रवि तर नहिं विराट महँ नहिं संध्या नहिं प्रात ।राधा मोहन के निज मन्दिर महा प्रलय नहिं जात ॥"

शेषनाग के कुमुद नामक फन पर पृथ्वी स्थित है, परन्तु यह 'ब्रजभूमि' उस कुमुद नामक फन पर नहीं है । इसीलिए रसिकों ने कहा कि शेषनाग के फन पर 'ब्रजभूमि' स्थित नहीं है । यह सूर्य के नीचे भी नहीं है । भगवान् के विराट स्वरूप में भी नहीं है । यहाँ संध्या और प्रात नहीं है अर्थात् यहाँ काल का कोई बन्धन नहीं है । राधामाधव के निज धाम में प्रलय का कभी भी प्रवेश नहीं हो सकता है । 'ब्रजभूमि' अनादि है, इसकी आराधना अनादिकाल से चली आ रही है किन्तु प्रकटलीला में भगवान् भी यहाँ समय-समय पर प्रकट होते हैं । उस क्रम से ऐसा कहते हैं कि ब्रह्माजी ने ब्रजभूमि की परिक्रमा की थी; उन्होंने श्रीकृष्ण के सखाओं और बछड़ों का हरण किया था, एक वर्ष तक भगवान् से उनका वियोग करा दिया था, यह एक अक्षम्य अपराध था । ब्रह्माजी ने विचार किया कि जो अपराध कभी भी समाप्त नहीं होता, भगवान् के 'धाम' के द्वारा ऐसा अपराध भी नष्ट हो जाता है । इसलिए उन्होंने 'ब्रजभूमि' की तीन परिक्रमा की थी, उससे उनका

अपराध नष्ट हो गया । यह निश्चित समझ लीजिये कि जो ब्रह्माजी द्वारा किये गये भगवान् व भक्त के अपराध को भी 'ब्रजभूमि' नष्ट कर देती है, उस ब्रज-परिक्रमा की महिमा को मेरे जैसा एक छोटा-सा जीव कैसे कह सकता है ? ब्रह्माजी से पहले ब्रज की परिक्रमा लगायी थी ब्रजदेवियों ने । श्रीमद्भागवत के अनुसार जब श्रीकृष्ण रास में अन्तर्धान हुए तो गोपीजनों ने उन्हें ढूँढा और ब्रज के अनेक वनों में उन्होंने गीत गाये । श्रीमद्भागवत में इसका प्रमाण है –

पुनः पुलिनमागत्य कालिन्द्याः कृष्णभावनाः ।
समवेता जगुः कृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/४५)

गोपीगीत में भी उन्होंने यही कहा है –

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ (श्रीभागवतजी १०/३१/१)

इस श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'दिक्षु' बहुवचन में है, जिसका अर्थ है – हर दिशा में, जहाँ-जहाँ वन थे, हम लोग तुमको ढूँढने गयीं, हम लोग तुम्हें बुलाने गयी थीं । इसीलिए ब्रजयात्रा करते समय हर वन में श्रीकृष्ण को सच्चे मन से बुलाना चाहिए । गोपियाँ प्रत्येक वन में गयीं, वनों में विचरण करते हुए उन्होंने श्रीकृष्ण को बुलाया तो वे मिल गये । इसी भाव से ब्रज की परिक्रमा लगाना चाहिए, पाप चाहे जले चाहे न जले, पाप भले ही बढ़ जाए । प्रभु की स्मृति शाश्वत बन जाए, इस भाव से परिक्रमा लगानी चाहिये । वेद-उपनिषद् में भी ब्रजभूमि का वर्णन है ।

'यत्र गावाः भूरि शृंगाः अयासः' – (ऋग्वेद १/१५)

जिस दिव्य धाम में बहुत सुन्दर सींग वाली गायें रहती हैं । यह ऋग्वेद का मन्त्र है, जिसमें गोलोक धाम का वर्णन किया गया है । **'व्रजन्ति गावो यस्मिन् स व्रजः'** व्रज, जहाँ गायें दिन-रात चला करती हैं ।

सूरदासजी ने ब्रह्ममोह लीला का वर्णन किया है । वे कहते हैं कि जब भगवान् ने देखा कि ब्रह्मा बहुत गिड़गिड़ा रहे हैं, बहुत विनती कर रहे हैं तो गोपालजी को दया आ गयी । छोटे से पाँच वर्ष के गोपालजी खड़े हैं और जगत्पिता ब्रह्मा उनके सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं तो बालकृष्ण को दया आयी और उन्होंने ब्रह्माजी से कहा – ब्रह्माजी ! तुम जाओ और ब्रज की परिक्रमा कर लो । तुम्हारा सारा अपराध समाप्त हो जाएगा । तुम्हारा करोड़ों जन्मों का अपराध नष्ट हो जाएगा, एक-दो जन्म की बात नहीं है । परिक्रमा करते समय बात नहीं करना चाहिए, अधिक से अधिक भगवन्नाम लेना चाहिए ।

ब्रह्माजी बोले – **माँगत बार-बार शेष ग्वालन को पाऊँ, रहियों जूठन खाय ।**

सूरसागर में सूरदासजी ने वर्णन किया है कि ब्रह्माजी ने कहा – 'प्रभो ! मुझे अपने सखा ग्वालबालों का जूठन दे दो । ' भागवत में वे कहते हैं – **अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ।**

यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥ (श्रीभागवतजी १०/१४/३२)

अरे ! इन ग्वारियाओं का कैसा सौभाग्य है,सनातन पूर्ण ब्रह्म इनका यार (दोस्त) बन गया, लंगोटिया यार बन गया । ये ग्वालबाल कभी उसके साथ गलबैयाँ देकर घूमते हैं, कभी उसके कन्धे पर चढ़ जाते हैं, कभी ये उसे अपने ऊपर बैठा लेते हैं । इसीलिए ब्रह्माजी कहते हैं कि मुझे इनका जूठन मिल जाए । तब श्यामसुन्दर को दया आ गई । भक्तों की सेवा से प्रभु अधिक प्रसन्न होते हैं । भागवत में भी उल्लेख है – **'मद्भक्तपूजाभ्यधिका'** (श्रीभागवतजी ११/१९/२१)

वराहपुराण में उल्लेख है – **'मद् वन्दनाच्छतगुणं मद्भक्तस्य तु वन्दनम् । मत्कीर्तनाच्छतगुणं मद्भक्तस्य तु कीर्तनम् ॥ '**

भगवान् कहते हैं कि मेरी वन्दना से सौ गुना अधिक मेरे भक्त की वन्दना है तथा मेरे कीर्तन से सौ गुना अधिक मेरे भक्त का कीर्तन है । अस्तु, जब ब्रह्माजी ने गोपालजी से कहा कि ग्वालबालों की जूठन मुझे मिल जाए तो गोपालजी प्रसन्न हो गए ।

भक्तों की सेवा यदि आप करेंगे तो इससे बड़ा कोई भजन नहीं है । इससे बड़ा भजन कुछ हो भी नहीं सकता । यदि कोई समझता है कि इससे भी बड़ा कोई भजन है तो मैं समझता हूँ कि अभी वह भक्ति को नहीं समझा, चाहे वह कितना भी बड़ा विद्वान् है ।

ब्रह्माजी ने ग्वालबालों की जूठन माँगी तो गोपालजी प्रसन्न हो गये और बोले –

'श्रीमुखवाणी कहत विलम्ब अब नेकु न लावहु, ब्रज-परिकरमा करहु देह को पाप नसावहु ।'

ब्रह्मा ! जाओ, अब ब्रज की परिक्रमा करो, तुम्हारे शरीर से जो मेरे भक्तों का अपराध हुआ है, इसको नष्ट करो ।

'कही लोक की यह विधि करि मनुहार, ब्रह्मा करि अस्तुति चले हरि दीन्हो उर हार ।'

ब्रह्माजी ने कहा – 'अच्छा प्रभो ! अब मैं ब्रज परिक्रमा करने जा रहा हूँ ।' उस समय गोपालजी ने अपना हार उतारकर उन्हें पहनाया । इसका अभिप्राय यह है कि गोपालजी की कृपा के बिना ब्रज-परिक्रमा पूरी नहीं हो सकती है, उनकी कृपा से ही परिक्रमा हो सकेगी, नहीं तो आपका मस्तिष्क बिगड़ जाएगा । हजारों व्यक्ति ब्रज-परिक्रमा की सोचते हैं लेकिन थोड़े ही लोग कर पाते हैं । पैसे की कमी के कारण भी बहुत से लोग धर्म नहीं कर पाते हैं । इसीलिए हमने मानमन्दिर की ब्रजयात्रा को निःशुल्क रखा है । इतने पर भी कितने ही लोगों के पास समय नहीं होता ।

अस्तु, श्रीकृष्ण ने ब्रह्माजी को हार दिया । **'धनि बछड़ा डर मेरो गयो ।'** ब्रह्माजी बोले – हे कृष्ण ! मेरा डर दूर हो गया । हे दीनबन्धो ! हे प्रणतपाल ! हे दीनानाथ ! मैं डर रहा था कि अनेक कल्पों तक न जाने मेरी क्या गति होगी ? मैंने भगवान् से उनके भक्तों का वियोग कराया । अब मेरा डर चला गया ।

'डर मेरो गयो, धन्य कृष्ण माला पहरायो ।'

कृष्ण धन्य हैं, जिन्होंने मुझे अपनी माला पहनायी और मुझे ब्रज-परिक्रमा की आज्ञा दी ।

अनुपम सुरम्य-सुशोभनीय 'श्रीबरसाना'

जहाँ पर चिकसौली गाँव बसा है, उस वन का नाम 'चात्रकवन' है । वहाँ पर एक कुण्ड है, जिसको ब्रजवासी 'विहारकुण्ड' कहते हैं किन्तु उसका शास्त्रीय नाम है 'माहेश्वरी सर' । उसको प्रणाम करने का यह मन्त्र है –

स्वर्णाभजल रम्याय पार्वती सरसे नमः । रुद्रहेलासमुद्भूत तीर्थराज वरप्रदे ॥

स्वर्ण की सी आभा वाला जल सुन्दर है, ऐसे पार्वतीजी के सरोवर को नमस्कार है ।

यहाँ पर पार्वतीजी भी आई हैं, जब वे आयीं तो भगवान् शंकर ने पार्वतीजी को हेला लगाया – 'अरे ! आप भी आ गयी हो ।' उस हेला अर्थात् आवाज से यह माहेश्वरी सर प्रकट हुआ है ।

चात्रकवन से चिकसौली बन गया । इसका प्रणाम मन्त्र है –

नमश्चात्रक रम्याय कृष्णानन्द प्रदायिने । गोपिका विमलोल्लास परिपूर्ण सुखात्मने ॥

चात्रक वन को नमस्कार है, जो बड़ा सुन्दर है, कृष्ण को आनन्द देने वाला है । यहाँ चित्रासखी का गाँव है । महासखियों के विमल उल्लास से यहाँ सुख भरा हुआ है । साँकरीखोर से श्रीकृष्ण आते हैं, इधर से गोपियाँ अपनी मटकी लेकर जाती हैं । श्रीकृष्ण दोहनीकुण्ड में आते हैं और दही खाते हैं । अतः महासखियों के आनन्द से यह वन भरा हुआ है । **'धनि ब्रज बरसाने छबि आगर ।'** सम्पूर्ण ब्रज में बरसाने की छवि सबसे अधिक है । आज भी आप देखो यह गह्वरवन, यह ब्रह्माचल पर्वत, साँकरी खोर – ऐसी छटा सारे ब्रज में कहीं नहीं है । जहाँ वृषभानु राजा हैं और उनके कुल की शोभा (मण्डन) राधिकारानी, जिनका उज्ज्वल रूप प्रकट होता है बरसाने में, जिस रूप पर श्रीकृष्ण भी मोहित होते हैं, गौ रांगी प्रकट होती हैं जहाँ, जिनके रूप को देखकर श्रीकृष्ण मूर्च्छित हो जाते हैं ।

'जहाँ वृषभानु नृपति कुल मण्डनि, राधा रूप उजागर ।'

जिस बरसाने में राधारानी का रूप चारों ओर दिखाई देता है । इसी भाव से यहाँ घूमो, इसी भाव से यहाँ परिक्रमा करो कि चारों ओर वही रूप दिखायी पड़ रहा है । बरसाने के बारे में एक स्थान पर श्रीरूपगोस्वामीजी ने लिखा है – **'यत्र कृष्णोऽपि गौरायते'** जिस बरसाने में पहुँचकर श्रीकृष्ण भी गोरे हो जाते हैं जिस गौरांगी के प्रभाव से, ऐसा वह बरसाना है; ऐसा गौ रांगी का रूप है बरसाने में । **'राधा रूप उजागर'** उस बरसाने के बारे में क्या कहा जाए, जहाँ ब्रह्म श्रीकृष्ण की ऐसी खातिरदारी होती है कि वे बरसाने में ही रम गये । ससुराल तो बहुतों को मिली, रामजी की भी ससुराल थी किन्तु वे मिथिला में नहीं रह पाए । बड़े-बड़े लोगों को ससुराल मिली लेकिन यहाँ के बारे में चाचा वृन्दावनदासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दर को ऐसी ससुराल मिली कि सदा के लिए वे वहीं बस गये, फिर बरसाने के बाहर नहीं गये । **'जहाँ बसत पहुनाई रुचि सों, नन्दसुवन अति नागर ।'** 'अति नागर' – कृष्ण बड़े चतुर थे किन्तु बरसाने में आकर सब चतुराई भूल गये । श्रीराधिकारानी के बरसाने में सुख का समुद्र सदा बढ़ता रहता है, कभी घटता नहीं है ।

'वृन्दावन हितरूप जाऊँ बलि, जहाँ बाढ़त सुख सागर ॥'

(श्रीब्रह्मचारीजीमहाराज बाबाश्री की कथा बड़े ध्यान से सुन रहे थे, उन्हें देखकर श्रीबाबामहाराज बोले कि ऊँचा गाँव के सन्त ब्रह्मचारीजीमहाराज ने मेरे साथ ब्रज की बहुत-सी परिक्रमा अकेले की है । जब इन्होंने मेरे साथ ब्रजयात्रा की तो हमने कहा कि आपने बड़ी सेवा की तो ये बोले कि हमको आप कुछ दोगे ? हमने कहा कि माँग लो । इन्होंने कहा कि मुझे आप 'भागवत-सप्ताह' सुना देना । हम जब ऊँचा गाँव में इनके स्थान पर 'सप्ताह-कथा' सुनाने गये तो कहीं आपने ऐसा श्रोता, ऐसा वक्ता नहीं सुना होगा, जब हम पहुँचे तो ये लेटे हुए थे । इन्होंने पूछा कि क्या आप सप्ताह सुनाने आ गये ? हमने कहा – 'हाँ, आ गये ।' इन्होंने कहा – 'अच्छा, बैठो-बैठो ।' ऐसा कहकर इन्होंने एक टूटा-सा तख़्त डाल दिया और एक आसन डाल दिया और स्वयं नीचे बैठ गये तथा हमसे बोले कि अब आप कथा सुनाओ और हम सुनें । उस समय हमने श्रीललिताजी को प्रणाम किया और कहा – 'हे ललिताजी ! हमारे सामने परीक्षित के रूप में ये श्रोता बैठे हैं, अब आप ही इन्हें सँभालना ।' फिर हमने कथा कहना आरम्भ किया तो दो-चार ब्रजवासी वहाँ से निकल रहे थे, उन्होंने कहा – 'बाबा ! दण्डवत .....। ' इन्होंने कहा – 'चुप नहीं रह सकते, देख नहीं रहे, यहाँ भागवत सप्ताह हो रही है ।' ब्रजवासियों ने पूछा – 'बाबा ! सप्ताह हो रही है ?' ब्रह्मचारीजी बोले – 'और क्या ?' इस तरह से हमने भागवत-सप्ताह इनको सुनायी । ऐसे-ऐसे ब्रज के खेल हैं ।)

श्रीरत्नकुण्ड – यह डभारा गाँव के पास ही स्थित है । इसका सम्बन्ध नन्दगाँव के मुक्ताकुण्ड से है । इसकी कथा गर्गसंहिता में गिरिराजखण्ड के अध्याय ६ में वर्णित है । ब्रजवासियों की सलाह से वृषभानुजी ने नन्दनन्दन के वैभव की परीक्षा हेतु दिव्य मोतियों के १ करोड़ हार वर वरण करने वाले लोगों के द्वारा नन्द बाबा के पास भेजे । वर वरण कर्ताओं ने नन्द बाबा को वे हार भेंट करते हुए कहा – 'नन्दजी ! अपनी कन्या राधा के लिए वृषभानु जी ने आपके लाड़ले लाल का हाथ माँगा है । वर की गोद भरने के लिए पहले कन्या पक्ष की ओर से ये दिव्य मोतियाँ ग्रहण कीजिये तथा हमारी कुल रीति के अनुसार कन्या की गोद भरने के लिए आप भी मोती दीजिये ।' नन्दजी के पास ऐसे मोती थे नहीं, कन्या की गोद भरने के लिए मोतियों को लेकर वे बहुत चिन्तित हो गये । अपने माता-पिता की चिन्ता को दूर करने के लिए श्यामसुन्दर ने उनमें से १०० हार लेकर उनकी खेती कर दी । जब नन्द बाबा ने अपने सेवकों को भेजा तो देखा कि वहाँ तो मोती के सैकड़ों वृक्ष खड़े हुए हैं । ये मोती वृषभानुजी के मोतियों से भी अधिक दीप्तिमान थे । वे रत्न जब वृषभानुजी के पास भेजे गये तो उन्हें देखकर महाराज वृषभानु को बड़ी चिन्ता हुई । उन्होंने कहा कि मैंने तो त्रिलोकी के सर्वश्रेष्ठ मुक्ता हार नन्दबाबा के पास भेजे थे कि ऐसे दिव्य रत्न तीनों लोकों में कहीं नहीं हैं किन्तु नन्द बाबा ने तो उनसे भी अधिक श्रेष्ठ रत्न भेज दिए, अब मैं क्या करूँ ? ये तो मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है । राधारानी ने अपने माता-पिता की चिन्तायुक्त बातों को सुना । वृषभानुजी रानी कीर्ति से कह रहे थे – 'अरी महर ! नन्द बाबा के यहाँ से ऐसे कीमती रत्न आये हैं कि हमारे पास तो ऐसा एक भी रत्न नहीं है ।' कीर्तिजी ने भी कहा – 'अब इनसे बढ़िया रत्न हम लोग कहाँ से लायेंगे ?' श्रीजी

समझ गयीं कि श्यामसुन्दर ने रत्नों की खेती की है । श्रीजी ने पहले तो वृषभानुजी से रत्न माँगे । उन्होंने पूछा कि तू उन रत्नों का क्या करेगी ? राधारानी ने कहा कि मैं अपने गुड्डा-गुड़िया का विवाह करूँगी । वृषभानुजी ने कहा कि तुझे गुड़िया-गुड्डे के लिए रत्न चाहिए और उनमें से एक भी रत्न यदि खो गया तो मेरी तो सारी प्रतिष्ठा ही धूमिल हो जायेगी । मैं नहीं दूँगा, जा यहाँ से । अब तो राधारानी कीर्ति मैया के पास गयीं और बोलीं – 'मैया ! आज मेरी गुड़िया का विवाह है । गुड्डा के लिए मुझे रत्न चाहिए । तू मझे दे दे, मैं तुझे वापस लाकर दे दूँगी ।' राधा बड़ी ही लाड़ली बेटी थी, इसलिए कीर्तिजी उनकी बात को टाल नहीं सकीं । कीर्तिजी ने कहा – 'राधा ! अपने पिता को मत बताना और खेलकर ये रत्न चुपचाप मुझे वापस कर देना ।' राधारानी अपनी माता से वे रत्न लेकर गयीं, उनसे गुड़िया-गुड्डा का विवाह किया । यह लीला नौबारी-चौबारी की है । जहाँ श्रीजी बचपन में गुड़िया-गुड्डा से खेलती थीं । बाद में श्रीजी उन रत्नों को लेकर गयीं और कुण्ड के निकट उनकी खेती कर दी तथा अपनी सखियों के साथ वृषभानु भवन में आ गयीं । रानी कीर्ति ने पूछा – 'राधा ! वे रत्न कहाँ हैं ?' राधारानी ने कहा – 'मैया ! उन्हें तो मैंने खेत में बो दिया ।' कीर्तिजी ने कहा – 'अरी बावरी ! कहीं रत्नों की भी खेती होती है ?' कीर्तिजी ने अपने कर्मचारियों से कहा – 'तुम लोग जाओ, नौबारी-चौबारी के पास खेत में राधा ने उन रत्नों को बो दिया है, उनको वहाँ से निकाल लाओ ।' वृषभानुजी के सभी कर्मचारी उस स्थान पर गये तो देखा कि वहाँ तो दिव्य रत्नों के बड़े-बड़े वृक्ष खड़े थे । उन्होंने वृषभानुजी और कीर्ति जी को इसकी सूचना दी । वृषभानुजी वहाँ गये और दिव्य रत्नों के वृक्षों को देखा तो बड़े ही प्रसन्न हुये और बोले कि राधा ने मेरी प्रतिष्ठा की रक्षा कर ली । कुण्ड के पास ही रत्नों के पेड़ खड़े थे, इसलिए उस कुण्ड का नाम है 'रत्न कुण्ड' । रत्न कुण्ड का यह प्रणाम मन्त्र है –

रत्नभूमिमये तीर्थे रत्नकुण्डसमाह्वय । कृष्णस्नपनसम्भूत रत्नोद्भव नमोऽस्तुते ॥

इस मन्त्र का अर्थ है – यहाँ की सारी भूमि रत्नमयी है । उस कुण्ड का नाम रत्नकुण्ड है । कृष्ण ने भी वहाँ जाकर स्नान किया, जहाँ राधारानी ने रत्न कुण्ड बनाया था । उस दिव्य कुण्ड को हम प्रणाम करते हैं ।

डभारा में सूर्यकुण्ड भी है । ब्रज में कई सूर्यकुण्ड हैं । एक सूर्यकुण्ड छोटा भरना में है, वह परकीया भाव की लीला से सम्बन्धित है । डभारा के सूर्य कुण्ड में स्वकीया भाव की लीला में स्वयं सूर्य नारायण आते हैं और दोनों राधा-माधव की पूजा करते हैं ।

श्रीगह्वरवन का स्वरूप

श्रीराधारानी ब्रजयात्राकाल के सत्संग-पड़ाव बरसाना (१३/१०/२०११) में हुए बाबाश्री के सत्संग से संकलित

मानगढ़ के चारों ओर जो वन है, उसका नाम है 'मानेंगित वन ।' मानेंगितवन और मयूरवन मिलकर गह्वरवन बनता है । मानेंगित वन के लता और वृक्ष मान की प्रेरणा देते हैं । यहाँ पर मान की उद्दीपन सामग्री रहती है । ब्रज में यद्यपि मानसरोवर में भी मान है किन्तु वहाँ पर मानलीला होने के बावजूद भी मानेंगित वन नहीं है । मानेंगित वन और मान मन्दिर यहीं बरसाने में हैं । इसलिए श्रीजी की मानलीला का ब्रज में सर्वप्रसिद्ध स्थल यही है । 'मानेंगितवन' मानमन्दिर के द्वार के बायीं ओर सजाया गया है । मानेंगित वन का प्रणाम मन्त्र है –

मानप्रवर्द्धनार्थाय मानेंगित वनाय ते । राधादिगोपिकामानहेलारूपाय ते नमः ॥

यह 'वन' मान के प्रवर्द्धन (बढ़ाने) के लिए है । यहाँ राधारानी और गोपिकाएँ हेला अर्थात् मान में श्रीकृष्ण का तिरस्कार करती हैं । वह वन हेला रूप है । वहाँ की लताओं को श्रीकृष्ण मनाते हैं । वे भी मान की मुद्रा में रहती हैं । इसीलिए इसको 'मानेंगित वन' कहा गया है ।

यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि लीला में लतायें, वल्लरियाँ, वृक्ष आदि साक्षात् सखीरूपा हैं और ये लीला में सहयोग करते हैं । जैसे प्रणाम मन्त्र में इस वन के लिए शब्द आया है – हेलारूप, उस समय वन के सभी लता-वृक्ष श्रीजी

के कारण उदास रहते हैं । इसलिए यह वन ही हेला रूप बन जाता है । उदाहरण के लिए जब गोपिकाएँ रास में अन्तर्धान होने पर श्रीकृष्ण को ढूँढ रही थीं, लीला दृष्टि से कृष्णान्वेषण में लता-वृक्षों ने गोपियों को श्रीकृष्ण का पता नहीं बताया था, यद्यपि गोपियों ने उन सभी से पूछा था । उन्होंने लताओं से पूछा, तुलसी से पूछा लेकिन किसी ने कुछ नहीं बताया । जब समय आता है तब बता देती हैं, इसका भी प्रमाण है । यह एक बहुत गम्भीर लीला की बात है, इसको समझना चाहिए । जैसे ढूँढते-ढूँढते जब प्रभु की मिलने की इच्छा हुई, तब लताओं ने बता भी दिया ।

एवं कृष्णं पृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् । व्यच्छत वनोद्देशे पदानि परमात्मनः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/२४)

जब गोपियाँ लताओं और वृक्षों से कृष्ण का पता पूछ रही थीं तो उन्होंने राधारानी और श्रीकृष्ण के चरणों को दिखा दिया । इसीलिए ब्रजभूमि के जितने भी वृक्ष-लतायें हैं, ये साधारण पेड़ नहीं हैं जैसे जड़ संसार में होते हैं । धाम के वृक्ष-लतायें लीला के अनुसार ही सहयोग-उद्दीपन करते हैं । अतः जब मानेंगित वन में श्रीजी मान करती हैं तो यह वन ही हेला रूप बन जाता है, तब इस वन का स्वरूप अलग ही हो जाता है,इसलिए इसको मानेंगित वन कहा गया है ।

भागवत के अनुसार कृष्ण-बलराम वृन्दावन में विचरण कर रहे हैं । लीला प्रसन्न मुद्रा में आरम्भ होने वाली है तो यहाँ के वृक्ष लीला में सहयोग करते हैं ।

स तत्र तत्रारुणपल्लवश्रिया फलप्रसूनोरुभरेण पादयोः ।
स्पृशच्छिखान् वीक्ष्य वनस्पतीन् मुदा स्मयन्निवाहाग्रजमादिपूरुषः ॥ (श्रीभागवतजी १०/१५/४)

बलरामजी आ रहे हैं तो वृन्दावन की लतायें और वृक्ष उनके चरणों में झुककर फल-फूल भेंट कर रहे हैं । ऐसा कोई वृक्ष-लता तो नहीं करते किन्तु यह भागवत का श्लोक है कि साक्षात् चेतन सखियों की तरह सारा पेड़ ही दाऊजी के चरणों में झुक गया और उनके चरणों में लोट रहा है । श्रीकृष्ण कहते हैं – दाऊ भैया ! वृन्दावन के लता-वृक्ष कितना प्रेम करते हैं । - **अहो अमी देववरामरार्चितं पादाम्बुजं ते सुमनः फलार्हणम् ।**
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन्स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥ (श्रीभागवतजी १०/१५/५)

वृन्दावन धाम के भँवरे वैसे नहीं हैं जैसे प्राकृत संसार में भँवरा आता है तो हम लोग उसको देखकर डरते हैं और वह काट लेता है । स्वयं श्रीकृष्ण कह रहे हैं – एतेऽलिनस्तव यशोऽखिललोकतीर्थं गायन्त आदिपुरुषानुपदं भजन्ते ।

हे दाऊजी ! ये जितने भी भँवरे हैं, ये आपका यश गा रहे हैं । ये भन-भन नहीं करते हैं । ये तो आपके परिकर ही हैं, आपके विशेष निजी भक्त हैं ।

प्रायो अमी मुनिगणा भवदीयमुख्या गूढं वनेऽपि न जहत्यनघात्मदैवम् ॥ (श्रीभागवतजी १०/१५/६)

आप छिपकर यहाँ ग्वालबाल के रूप में लीला कर रहे हैं किन्तु आपके जो उपासक मुनिगण हैं, वे आपका पीछा नहीं छोड़ रहे हैं । अन्य भी प्रमाण हैं, जैसे गोपियाँ रास में गाते-गाते थक गयीं तो रास नृत्य का गीत भँवरे गाने लगे, 'ता-थेई-थेई' बोल बोलने लगे । इस बात को भागवत में शुकदेवजी ने कहा है कि रास के नृत्य के समय जितनी भी गोपियाँ और जितने भी कृष्ण थे, वे सभी थक गये थे ।

कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलधर्म वक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ।
गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेशस्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरास गोष्ठ्याम् ॥ (श्रीभागवतजी १०/३३/१६)

रास के नृत्य के समय मृदंग बज चुके थे और अब उनका बजना बन्द हो गया था । उस समय आभूषणों के शब्द कंगन-किंकिणी आदि ही ताल लगा रहे थे तथा भँवरे गायक बनकर रास-गोष्ठी में गीत संचालन कर रहे थे । ऐसा इस प्राकृत संसार में नहीं हो सकता है । वह चिन्मय धाम है, अतः वहाँ की हर वस्तु लीला में सहयोग करती है । मानमन्दिर के पास जो वन है, उसका नाम मानेंगित वन इसलिए है क्योंकि वह मानलीला में सहयोग करता है ।

ब्रजाचार्य श्रीनारायण भट्टजी कृत ग्रन्थ 'ब्रज भक्ति विलास' में ब्रज के लीला स्थलों को प्रणाम करने के जो मन्त्र लिखे गये हैं, उनमें अद्भुत शक्ति है । मान मन्दिर में जबसे हम आये हैं, तबसे लगातार वहाँ कीर्तन हो रहा है, जबकि

हम लोग गायक नहीं हैं, सुर-ताल का ज्ञान नहीं है किन्तु ब्रज भक्ति विलास में मान मन्दिर को प्रणाम करने का जो मन्त्र है, उसके अनुसार मान मन्दिर में देव-गन्धर्वगण रहते हैं, जब श्रीजी मान करती हैं, उस समय वे उनकी मान विधान की लीला गाते हैं । ऐसा वह मान मन्दिर है, जहाँ की सारी भूमि रत्नमयी है ।

देवगन्धर्वरम्याय राधामानविधायिने । मानमन्दिरसंज्ञाय नमस्ते रत्नभूमये ॥

मानमन्दिर में जो गुफा थी, उसके अन्दर एक शिला है । मन्दिर बनने के पहले उस शिला को एक झरोखे के भीतर घुसाकर लगा दिया गया था । हम जब यहाँ रहने आये थे तो किसी ने बताया कि यहाँ एक चमत्कारिणी मान शिला है । वह शिला तो झरोखे के भीतर गुफा में थी, उसके ऊपर एक कमरा था, उसमें हम बैठा करते थे । उस शिला में कोई चमत्कार अवश्य है, यह तो हमको पता चल गया क्योंकि एक दिन यह विचित्र घटना हुई कि गुफा के ऊपर कमरे में हम बैठे थे, उस समय बाहर से कोई महात्मा आये और हमसे बोले कि नीचे से यह रोशनी कहाँ से आ रही है ? हमने कहा कि नीचे तो गुफा है, उसमें अँधेरा है, रोशनी कहाँ से आएगी ? महात्मा ने कहा – 'मैं बताता हूँ, रोशनी कहाँ से आ रही है ?' उनके साथ हम सीढ़ी से नीचे गुफा में उतरे । उन महात्मा को तो कुछ पता भी नहीं था कि कहाँ गुफा है, कहाँ शिला है किन्तु उन्होंने गुफा के भीतर जाकर झरोखे के भीतर शिला पर अपना हाथ रख दिया और बोले कि रोशनी यहाँ से आ रही है । इसके बाद वे चले गये । उस शिला को हमने ध्यान से देखा तो जैसे कसौटी की नीली शिला होती है, उसी प्रकार उस शिला पर श्रीजी के बैठने का पीला चिह्न था । ध्यान से देखने पर उस शिला में पीलापन दिखाई पड़ता है ।

मानमन्दिर के बारे में ब्रजवासियों से हमने जो सुना है, उसे भी बताते हैं । इस मन्दिर में हमसे पहले राय सिंह बाबा रहते थे । उनसे पहले बाबा दल सिंह थे तथा उनसे भी पहले राजस्थान के कोई राजा रहते थे । वे मान मन्दिर में भजन करने के लिए आये थे क्योंकि उन्हें पता चल गया था कि उनके पुत्र उनसे राज्य छीन लेंगे तो वे राजस्थान से भागकर यहाँ आये थे । उस समय मानगढ़ वीरान था । हम भी जब यहाँ आये थे तो यह वीरान स्थान था, यहाँ कोई नहीं रहता था, चोर-डाकुओं का अड्डा था । मेरे सामने ही गह्वरवन में तीन हत्यायें हो चुकी थीं । जबसे मान मन्दिर में कीर्तन प्रारम्भ हुआ, तबसे यहाँ सब लोग सुरक्षित हो गये, अन्यथा लोगों ने इसे बहुत भयानक स्थान बना दिया था । जब राजस्थान के राजा यहाँ आये तो वे साधु बनकर गुफा के भीतर बैठकर भजन किया करते थे । उस समय मानशिला झरोखे के अन्दर नहीं थी, बाहर थी । गुफा में भजन करते-करते उन राजा रूपी महात्मा की समाधि-सी लग जाती थी । मानमन्दिर में सर्प तो प्राचीनकाल से ही बहुत रहते थे । एक बार जब वे महात्मा गुफा के भीतर भजन कर रहे थे तो एक सर्प आ गया, उन्हें कुछ पता नहीं पड़ा, उन्होंने जप माला समझकर उस सर्प को पकड़ लिया तो वह सर्प उनको काटने लगा । इसका यह परिणाम हुआ कि उनको ध्यान में जो श्रीजी की स्फूर्ति हो रही थी, अब श्रीजी के स्थान पर उनको नशा सा आने लगा । उन्होंने आँख खोली और सोचने लगे कि मुझे क्या हो रहा है तो उन्होंने देखा कि सर्प हाथ में लिपटा था । सर्प को हाथ से छुड़ाकर उन महात्मा ने अलग किया और वे समझ गये कि मुझे सर्प ने काटा है । इसके बाद वे गुफा से निकलकर बाहर आये और करुणापूर्वक श्रीजी को पुकारने लगे कि मैंने जीवन भर राज्य किया किन्तु जब सुना कि मेरे पुत्र मुझे मारकर मेरा राज्य ले लेंगे तो मैं भागकर यहाँ आया कि अब भगवान् की ही शरण लेनी चाहिए । यह संसार तो झूठा है, न कोई स्त्री है, न पुत्र है । हे राधे ! अब मेरी अन्तिम पुकार यह है कि मैं यहाँ भजन नहीं कर पाया । उनके ऊपर विष का नशा चढ़ता गया और वे अपने हाथ ऊपर करके राधे-राधे पुकारते रहे । अचानक उनकी उँगलियों से काला-काला विष गिरने लगा, जो सर्प ने काटा था । उन्होंने सोचा कि यह क्या है ? श्रीजी की कृपा से उनकी मृत्यु नहीं हुई । वे समझ गये कि राधारानी ने फिर से मुझे भजन करने का अवसर दे दिया है । लेकिन उनके हाथ में जो सर्प ने काटा था तो हाथ में घाव हो गया और उसमें कीड़े पड़ गये । बहुत बूढ़े ब्रजवासियों से हमने सुना है कि उनसे ब्रजवासी कहते थे – 'बाबा ! इसका उपचार करवा लो, घाव में कीड़े पड़ गये हैं ।' वे महात्मा कहते थे कि जिन राधारानी

ने मेरे प्राण बचाये हैं । वे इस घाव को भी ठीक कर सकती थीं । इसमें कोई रहस्य है कि श्रीजी ने घाव ठीक नहीं किया । उनका जो विधान है, मुझे उसी के अनुसार चलना है । उनके घाव से कीड़े नीचे गिर जाते थे तो वे पुनः घाव में ही रख लेते थे । एक दिन श्रीजी ने स्वप्न में उनसे कहा कि तुम पहले राजा थे, तब तुमने बहुत से शिकार किये थे । जिन जीवों को तुमने मारा, वे सभी तुम्हारे घाव के कीड़े बन गये थे । तुम्हारा भोग समाप्त हो चुका है, अब तुम मेरी मानशिला के पास जाकर भजन करो, तुमको मेरा अनुभव हो जाएगा । श्रीराधारानी के स्वप्नादेश को सुनकर वे महात्मा फिर से मानशिला के पास आये और वहाँ भजन करते रहे । इस तरह फिर उनको श्रीजी का अनुभव हुआ ।

मानमन्दिर की एक अन्य भी सबसे अलग ढंग की नई मान लीला है । जिस समय श्रीजी ने मान किया था, तब श्रीकृष्ण ने आकर श्रीजी के चरणों को पकड़ना चाहा । उस समय श्रीजी को याद आया कि जब श्यामसुन्दर ने गिरिराज गोवर्धन को धारण किया था, तब इन्द्रादि देवताओं ने आकर श्रीकृष्ण की वन्दना की थी । मेरे चरणों में ऐसा क्या है, जो ऐसे अतुलनीय महिमा वाले कृष्ण मेरे पास आकर मेरे चरणों को पकड़ रहे हैं । ऐसा विचारकर श्रीजी अपने चरणों की ओर देखने लगीं । श्रीजी का मान कब छूटेगा, बहुत उदास भाव से श्रीजी के सामने हाथ जोड़कर श्रीकृष्ण उनके पास आ गये । उस समय श्रीकृष्ण का हाथ आगे की ओर था । श्रीजी के चरणों में दस नख मणियाँ हैं । हम लोगों के नाखून होते हैं, श्रीजी के नखमणि हैं, उनसे दिव्य प्रकाश निकलता है । जब श्रीजी ने अपने चरणों की ओर देखा तो उनको अपने दस नख मणियों में दस श्रीकृष्ण दिखायी दिए । श्रीजी ने उनका उदास मुख देखा कि ये मुझे मनाते-मनाते बहुत थक गये हैं तो उनका मान अपने आप ही टूट गया, जैसे मुट्ठी में बालू भर लो तो वह धीरे-धीरे गिरती जाती है । श्रीकृष्ण के मुख पर उदासी देखकर श्रीजी के हृदय में करुणा उत्पन्न हो गयी । अपने चरणों के नखमणियों में प्रतिबिम्बित श्रीकृष्ण के मुख को देखकर मानिनी राधा का मान करुणा से अपने आप ही विगलित हो गया ।

मानमन्दिर से श्रीजी मन्दिर की ओर चलने पर रास्ते में दानगढ़ पड़ता है । वैसे तो दानगढ़ से लेकर साँकरी खोर तक का पूरा क्षेत्र दान का ही है किन्तु दानगढ़ और साँकरी खोर में एक अन्तर यह है कि साँकरी खोर में सामूहिक दान है और दानगढ़ में केवल श्रीजी ही दान देती हैं । वहाँ पर श्यामसुन्दर ने राधारानी से कहा कि मैं आपसे रति (प्रेम) का दान माँगता हूँ तो श्रीजी ने कहा – 'ठीक है, वह तुमको मिल जाएगा किन्तु एक बात तुमको भी मुझे देनी पड़ेगी । ' श्यामसुन्दर ने पूछा – 'वह क्या है ?' श्रीजी ने कहा – **'मम पितृपुरे त्वं हि मया सह प्रतिष्ठतु ।'**

तुम सदा मेरे साथ बरसाने में रहो क्योंकि ब्रह्मा ने बहुत लम्बे समय तक तप किया है । तुम्हारे यहाँ रहने से ब्रह्मा कृतार्थ हो जायेंगे तथा तुम्हारा वचन पूरा हो जाएगा । मुझे भी बरसाना बहुत प्रिय है ।

ब्रह्माचल पर्वत पर ही दानगढ़ है, यहाँ दोनों राधा-माधव ने इस प्रकार दान दिया । इस बात की कोई शंका नहीं करनी चाहिए कि जब राधा-माधव सदा बरसाने में रहेंगे तो वृन्दावन कैसे जायेंगे, नन्दगाँव कैसे जायेंगे, गोवर्धन कैसे जायेंगे क्योंकि यह लीला वैचित्री है । लीला की विचित्रता को कोई मनुष्य नहीं समझ सकता है । बरसाने के गह्वर वन में श्रीजी का नित्य निवास बताया गया है ।

यत्र गह्वरकं नाम वनं द्वन्द्वमनोहरम् । नित्यकेलिविलासेन निर्मितं राधया स्वयम् ॥

श्रीजी का यहाँ नित्य निवास है तो इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वे वृन्दावन नहीं जाती हैं, नन्दगाँव नहीं जाती हैं अथवा गिरिराजजी नहीं जाती हैं । यह लीला वैचित्री है, जिसको मनुष्य नहीं समझ सकता है । दानगढ़ में श्रीजी ने श्रीकृष्ण से दान लिया है कि तुम सदा बरसाने में रहना । उन्होंने कहा – 'ठीक है । ' रति (प्रेम) दान के अतिरिक्त यहाँ भी दही दान लीला हुई है । राधारानी ने श्रीकृष्ण को यहाँ फटकारा था कि तुम इस तरह से मुझसे दही माँगने के लिए आ जाते हो । यहाँ दान का वेष धारण करके दधि की इच्छा से श्रीकृष्ण आते हैं तो श्रीजी उनको ताड़ना देती हैं कि तुमको इस तरह से दधि दान लेने का क्या अधिकार है ? तुमको अपने माता-पिता की लज्जा नहीं आती है । तुम नन्द बाबा का नाम डुबोते हो । इस तरह से श्रीजी ने श्यामसुन्दर को यहाँ फटकारा ।

दानगढ़ का प्रणाम मन्त्र – दानवेषधरायैव दध्युपास्याभिलाषिणे । राधानिर्भत्सितायैव कृष्णाय सततं नमः ॥

दानगढ़ से आगे मोर कुटी है । जहाँ राधा-माधव मयूर बनकर नृत्य करते हैं । इस विषय में यह भी जानना चाहिए कि श्रीकृष्ण अपने मस्तक पर मोर पंख क्यों धारण करते हैं ? इस सन्दर्भ में उपनिषद् का वाक्य है –

राधाप्रियमयूरस्य पत्रं राधेक्षणप्रभं बिभर्ति शिरसा कृष्णः तस्याश्चूडानिधम्यतः ।

इस श्लोक में तीन कारण बताये गये हैं । पहला कारण तो यह है कि राधारानी जिस मयूर का पालन करती थीं, उसे अपने पास रखती थीं, उसे चुगाती थीं, वह मयूर श्रीजी के सामने उनके आँगन में नृत्य करता था । यह उसका पंख था, जिसे श्रीकृष्ण धारण करते हैं । दूसरा कारण यह है कि वह पंख भी अलग ढंग का था । उसमें किशोरीजी के नेत्रों की छटा आ गयी थी । तीसरा कारण यह है कि उस मयूर पंख में श्रीजी के चूड़ा, (जिसे जूड़ा कहते हैं) की छाया आती थी । इन तीन कारणों से श्यामसुन्दर मयूर पंख धारण करते हैं ।

जब मोर कुटी पर श्यामसुन्दर नृत्य करने लगे तो उन्होंने जिस मोर पंख को धारण किया, वह श्रीजी के मयूर का पंख था और मयूर राधामाधव को प्रिय भी है । इसीलिए उस महाकुटी का नाम मयूर कुटी पड़ गया ।

मोरकुटी से आगे चलने पर साँकरी खोर है । वहाँ की स्थली बड़ी दिव्य है । रसिकों ने लिखा है कि गह्वरवन और साँकरी खोर में अवश्य अनुभव होता है । साँकरी खोर में नित्य ही गोपियाँ दही की मटकी लेकर आती-जाती हैं । श्यामसुन्दर गोपियों एवं श्रीजी से यहाँ नित्य दही दान लेते हैं ।

वास्तविक बरसाना

बाबाश्री द्वारा कथित यात्रा-सत्संग (१४/१०/२०११) से संकलित

बरसाना के बारे में बहुत से लोग कम ही जानते हैं । वे सोचते हैं कि वृन्दावन केवल पाँच कोस का है । वे शास्त्र की दृष्टि से नहीं जानते हैं । शास्त्र में वृन्दावन का जो स्वरूप बताया गया है, बरसाना को जानने के लिए उसको जानना आवश्यक है । सन्नन्दजी ने नन्दबाबा को वृन्दावन की महिमा सुनायी थी, जिस समय महावन में कंस के राक्षसों का बहुत अधिक उत्पात होने लगा । सन्नन्दजी सबसे बड़े-बूढ़े गोप थे । उन्होंने नन्दबाबा से कहा – 'नन्द ! चलो महावन से वृन्दावन चलें ।' नन्दबाबा ने पूछा - 'महावन से वृन्दावन कितनी दूर है और कितने कोस बड़ा है ? उसका लक्षण क्या है ? मुझे आप वृन्दावन का ठीक-ठीक स्वरूप बताइए ।' सन्नन्दजी ने कहा – मथुरामण्डल के भीतर वृन्दावन है । मथुरा-मण्डल बहुत बड़ा है ।

प्रागुदीच्यां बर्हिषदो दक्षिणस्यां यदोः पुरात् । पश्चिमायां शोणपुरान्माथुरं मंडलं विदुः ॥
विंशद्योजनविस्तीर्णं सार्द्धं यद्योजनेन वै । माथुरं मंडलं दिव्यं ब्रजमाहुर्मनीषिणः ॥

(गर्गसंहिता, वृन्दावनखण्ड – १/११,१२)

बर्हिषद (बर्ह) से ईशानकोण, यदुपुर से दक्षिण और शोणपुर से पश्चिम की भूमि को 'माथुर मण्डल' कहते हैं । बर्हिषद अथवा बर्ह अलीगढ़ जिले में पड़ता है, वहाँ से लेकर यदुपुर (बटेश्वर), शोणपुर के बीच की भूमि मथुरा मण्डल है । मथुरा मण्डल के भीतर साढ़े बीस योजन विस्तृत भूभाग को मनीषी पुरुषों ने 'दिव्य माथुर-मण्डल' या 'ब्रज' बताया है । मथुरा मण्डल तो बहुत बड़ा है और उसके भीतर ब्रज अलग है । मथुरामण्डल तो बटेश्वर तक है । मथुरामण्डल के भीतर साढ़े बीस योजन अर्थात् चौरासी कोस ब्रज है ।

नन्दबाबा ने पूछा – सन्नन्दजी ! आपको यह कैसे ज्ञात हुआ ? आपके इस ज्ञान का क्या शास्त्रीय आधार है ?

सन्नन्दजी ने कहा – एक बार मैं मथुरा में वसुदेवजी के घर ठहरा था । वहाँ गर्ग ऋषि आये थे । इनके गुरु हैं महादेवजी, वे महादेवजी के कृपापात्र हैं । महादेव जी के द्वारा इन्हें भगवान् की समस्त लीलाओं का, सभी रहस्यों का ज्ञान हुआ ।

महदेवजी ने यह ज्ञान गर्गजी को दिया और गर्ग जी के द्वारा यह ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ । गर्गाचार्यजी ने कहा था कि मथुरा मण्डल में 'वृन्दावन' एक ऐसा वन है, जो वैकुण्ठ से भी अधिक श्रेष्ठ है । वैकुण्ठ से बढ़कर दूसरा कोई लोक न तो हुआ है और न आगे होगा । केवल एक 'वृन्दावन' ही ऐसा है, जो वैकुण्ठ की अपेक्षा भी परम उत्कृष्ट है । वृन्दावन के भीतर ही गिरिराज गोवर्धन हैं । यमुनाजी का पुलिन भी वृन्दावन में है । कालिन्दी के किनारे जो पुलिन है, वह भी वृन्दावन है । (आजकल के लोग केवल उतने क्षेत्र को ही वृन्दावन समझते हैं किन्तु वृन्दावन के विस्तृत स्वरूप को नहीं जान पाते हैं) बृहत्सानु (ब्रह्माचल पर्वत या बरसाना) तथा नन्दीश्वर पर्वत (नन्दगाँव) भी वृन्दावन में है । चौबीस कोस के विस्तार में वृन्दावन स्थित है । इसलिए उसी वृन्दावन में हम लोगों को रहना चाहिए । बृहत्सानु (बरसाना) में वृषभानुजी ने तथा नन्दीश्वर पर्वत पर नन्दबाबा ने निवास किया । चौबीस कोस के वृन्दावन में ये दोनों पर्वत ब्रह्माचल और नन्दीश्वर अत्यधिक पूज्य हैं क्योंकि राधिकारानी ब्रह्माचल पर विराजती हैं तथा नन्दीश्वर पर्वत पर श्यामसुन्दर विराजते हैं । श्रीविश्वनाथ चक्रवर्तीजी ने 'नन्दीश्वराष्टक' में लिखा है –

यत् सौभगं भगवता धरणीभृतापि न प्राप्यते सुरगिरिः स हि को वराकः ।

नंदः स्वयं वसति यत्र सपुत्रदारो नन्दीश्वरः सः मदमंदमुदं दधातु ॥ (श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती पाद कृत नन्दीश्वराष्टक)

सुमेरु आदि पर्वत की महिमा क्या कहें, श्रीगिरिराज गोवर्धन भी नन्दीश्वर पर्वत की महिमा को नहीं प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि गिरिराज जी को तो श्रीकृष्ण ने सात दिनों तक ही धारण किया परन्तु नन्दीश्वर पर्वत पर तो वे अपने माता-पिता नन्द-यशोदा के साथ दिन-रात वास करते हैं । इसी तरह ब्रह्माचल पर्वत पर अपने माता-पिता कीर्ति-वृषभानु के साथ श्रीराधिका रानी निवास करती हैं । इसीलिए वृन्दावन में ये दोनों पर्वत विशेष महत्त्व के हैं । वृन्दावन के रहते यदि कोई अन्य तीर्थों की यात्रा करता है तो वह व्यर्थ है ।

नन्दबाबा ने पूछा – क्या अन्य तीर्थों की यात्रा नहीं करना चाहिए ?

सन्नन्द जी ने कहा – नहीं । तीर्थों का राजा प्रयाग है । प्रयाग ने भी वृन्दावन की पूजा की है । जब तीर्थों के राजा प्रयाग भी वृन्दावन की पूजा करते हैं तो फिर किसी अन्य तीर्थ में जाना बेकार है ।

नन्दबाबा ने पूछा – प्रयाग ने वृन्दावन की पूजा कब की ?

सन्नन्द जी बोले – नन्द सुनो, प्राचीन काल में नैमित्तिक प्रलय के अवसर पर एक महान दैत्य प्रकट हुआ था, जिसका नाम शंखासुर था, वह वेदद्रोही था, उसने समस्त देवताओं को जीत लिया था । देवताओं को जीतकर वह दैत्य ब्रह्मलोक में गया । नैमित्तिक प्रलय में ब्रह्माजी का एक दिन समाप्त होता है और रात को वे सोते हैं तो उस समय ब्रह्माजी सो रहे थे । चार अरब तीस करोड़ वर्ष का उनका दिन होता है और उतनी ही बड़ी उनकी रात होती है । वह दैत्य ब्रह्माजी के पास से वेदों को चुराकर समुद्र में घुस गया । वेदों के जाने से देवताओं का सारा बल चला गया । तब सभी ने भगवान् का स्मरण किया । भगवान् ने मत्स्य अवतार धारण किया और नैमित्तिक प्रलय के सागर में शंखासुर से युद्ध किया । शंख ने भगवान् के ऊपर शूल चलाया । भगवान् ने अपने चक्र से उस शूल के सैकड़ों टुकड़े कर दिए । तब शंख ने भगवान् के वक्षःस्थल पर प्रहार किया । भगवान् ने हाथ में गदा लेकर उस दैत्य की पीठ पर आघात किया । गदा के प्रहार से उस दैत्य को इतना कष्ट हुआ कि उसका चित्त कुछ व्याकुल हो गया और उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से भगवान् को घूँसे से मारा । तब भगवान् ने कुपित होकर अपने चक्र से उसके मस्तक को सींग सहित काट डाला । शंख को जीतकर भगवान् देवताओं सहित प्रयाग गये और वहाँ उन्होंने चारों वेद ब्रह्माजी को दिए । प्रयाग में गंगा के तट पर दशाश्वमेध घाट है, वहाँ भगवान् ने सम्पूर्ण देवताओं के साथ दस अश्वमेध यज्ञ किये और प्रयाग तीर्थ के अधिष्ठाता देवता को बुलाकर उसे तीर्थराज बना दिया । संसार में जितने भी तीर्थ हैं, इन सबके राजा प्रयाग हैं । राजा के ऊपर छत्र लगता है तो भगवान् ने अक्षय वट को प्रयाग का छत्र बना दिया । अक्षय वट प्रलय में भी नष्ट नहीं होता है । जैसे राजा के शरीर पर चामर हिलाया जाता है, उसी प्रकार गंगा और यमुना अपनी तरंग रूपी चामरों से प्रयाग की सेवा करने लगीं । उस

समय जम्बू द्वीप के सारे तीर्थ भेंट लेकर तीर्थराज प्रयाग के पास आये और उनकी पूजा-वन्दना करके तथा भेंट देकर वे तीर्थ अपने-अपने स्थान को चले गये । तभी कलहप्रिय देवर्षि नारदजी भी प्रयाग के पास पहुँचे । उन्होंने देखा कि प्रयाग तीर्थों के राजा बनकर बहुत ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं । वे समझ गये कि प्रयाग को तो तीर्थों के राजा बनने पर बड़ा मद हो गया है । अब इनका इलाज करना चाहिए । नारदजी को देखकर प्रयाग ने उनको प्रणाम किया ।

श्रीनारदजी ने कहा – 'हे महातपस्वी तीर्थराज ! तुम धन्य हो । सभी तीर्थों ने यहाँ आकर तुम्हारी पूजा की और तुम्हें भेंट समर्पित की है । ऐसा तो संसार में किसी का भी सौभाग्य नहीं जगा जैसा कि तुम्हारा हुआ है कि तुम पृथ्वी के समस्त तीर्थों के राजा बन गये हो । परन्तु एक बात बताओ कि क्या ब्रज तुम्हारा सम्मान करने के लिए, तुम्हें भेंट देने के लिए आया कि नहीं ?' प्रयाग ने कहा – 'ब्रज तो नहीं आया ।' नारदजी बोले – 'अरे, ब्रज तुम्हारा सम्मान करने के लिए नहीं आया तो फिर तुम किस बात के तीर्थराज हो, तब तुम्हारी क्या महिमा रही ? ब्रज तो बहुत ही प्रमादी है, जिसने यहाँ न आकर तुम्हारा अपमान किया है ।' सन्नन्द जी ने कहा – ऐसा कहकर नारदजी वहाँ से चले गये । तब तीर्थराज के मन में बड़ा ही क्रोध हुआ और वे सोचने लगे कि ब्रज ने मेरा अपमान किया । क्रोध में भरकर प्रयाग तुरन्त ही श्रीहरि के धाम में पहुँचे और उनसे बोले – 'हे देवदेव ! मैं आपके पास इसलिए आया हूँ कि आपने मुझे तीर्थों का राजा बना दिया तो समस्त तीर्थों ने आकर मुझे भेंट दी किन्तु मथुरामण्डल नहीं आया, उसने मेरा तिरस्कार किया है । ब्रज में अनेक तीर्थ गोवर्धन, बरसाना, नन्दगाँव आदि हैं किन्तु उनमें से एक भी मेरा सम्मान करने के लिए नहीं आया । मैं आपके पास इसलिए आया हूँ कि आप ब्रज को दण्ड दीजिये ।' श्रीभगवान् ने कहा – "प्रयाग ! हमने तुम्हें पृथ्वी के समस्त तीर्थों का राजा बनाया है किन्तु अपने घर का राजा नहीं बनाया है । ब्रज हमारा घर है । तुम तो हमारे घर के मालिक बनना चाहते हो । मथुरामण्डल मेरा साक्षात् घर है, परात्पर धाम है, त्रिलोकी से परे है, प्रलय में भी उसका नाश नहीं होता है । अब तुम अपने घर जाओ ।" सन्नन्दजी कहते हैं – भगवान् के वचन सुनकर प्रयाग बड़े ही आश्चर्यचकित हो गये, उनका सारा अभिमान नष्ट हो गया । नारदजी ने क्षण भर में ही उनकी चिकित्सा कर दी । प्रयाग तुरन्त ही मथुरामण्डल में आये और उन्होंने ब्रज का पूजन किया और बोले – 'हे ब्रज ! मेरे द्वारा आपका बड़ा अपराध हुआ । आप मुझे क्षमा करें ।' इसके बाद स्वयं तीर्थराज प्रयाग ने अपने अपराध का प्रायश्चित् करने के लिए ब्रजचौरासी कोस की परिक्रमा की और फिर वे अपने स्थान को चले गये ।

वे लोग बड़े ही सौभाग्यशाली व श्रीब्रजप्रेमरस-प्राप्ति के सहज कृपापात्र हैं, जो ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा करते हैं ।

सबसे सरस साधन व परम मन्त्र 'राधा' नाम

बाबाश्री के संध्याकालीन पदगान (१५/९/२०२४) से संकलित

अली किशोरीजी, जिनको श्रीजी ने गह्वरवन में दर्शन दिया था, उनका पद है – **'आधो नाम तारिहैं श्रीराधा ।'** केवल आधा अक्षर 'रा' कहने से ही राधारानी उद्धार कर देंगी ।

'रा के कहे रोग सब मिटिहैं, धा के कहे मिटे भव बाधा ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि छः रोग अनादि काल से हम लोगों को पकड़े हुए हैं । केवल 'रा' कहने से ही ये सब रोग नष्ट हो जायेंगे तथा 'धा' कहने पर समस्त भव बाधाएँ नष्ट हो जाएँगी । ऐसा पद विश्व में कहीं नहीं है । यद्यपि रामचरितमानस में गोस्वामीजी ने राम नाम की महिमा कई दोहों-चौपाइयों में लिखी है । महापुरुषों की तुलना नहीं करनी चाहिए किन्तु अली किशोरी जी के राधा नाम महिमा सम्बन्धी इस पद के सामने सारी रामचरितमानस को न्यौछावर कर दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं है ।

जुग अक्षर की महिमा को कहै, गावत वेद पुराण अगाधा ।
अली किशोरी नाम रटत नित, लागी रहत समाधा ॥

विशाखा सखी के अवतार थे हरिराम व्यासजी महाराज । रसिकत्रयी (वृन्दावन के तीन सबसे प्रसिद्ध रसिक) में इनकी गिनती है । राधा नाम की महिमा के बारे में इन्होंने कहा है – **परम धन राधा नाम अधार ।**

जाहि श्याम मुरली में टेरत, निशदिन बारम्बार ॥

जन्त्र-मन्त्र अरु वेद तन्त्र में, सब तारन को तार ।

वेद-पुराण तथा अन्य शास्त्रों में जितने भी मन्त्र हैं, उन सबको तारने वाला राधा नाम है ।

कोटिक रूप धरें नन्दनन्दन, तऊ न पायो पार ॥

राधा नाम के तत्त्व को जानने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण करोड़ों रूप धारण करते हैं । जोगिन, पटबीजिन, मालिन, मनिहारिन आदि अनेक छद्म रूप धारण करते हैं किन्तु वे राधा नाम की महिमा का पार नहीं पा सके ।

श्रीशुक प्रकट कियो नहीं याते, जानि सार को सार ।

राधा नाम परम धन है । इसीलिए श्रीमद्भागवत में स्पष्ट राधा नाम नहीं है । १८ हजार श्लोकों में साफ-साफ़ राधा नाम नहीं है । सार का भी सार जानकर शुकदेवजी ने भागवत में राधा नाम को प्रकट नहीं किया । मेरे पास बहुत से लोग आते हैं और कहते हैं कि हमारा कोई गुरु नहीं है, हमें गुरु मन्त्र दे दीजिये । इसकी कोई आवश्यकता नहीं है । राधा नाम रटो, यह सारे मन्त्रों का सार है । न किसी गुरु की आवश्यकता है और न ही मन्त्र की । व्यासजी कहते हैं कि जिस राधा नाम को शुकदेवजी ने स्पष्ट रूप से भागवत में प्रकट नहीं किया । इस परम धन को बहुत छिपाकर रखा गया किन्तु अब मैं चिल्लाकर इस राधा नाम की महिमा कह रहा हूँ, चाहे पाप लगे चाहे अपराध लगे ।

व्यासदास अब प्रगट बखानत, डारि भार में भार ॥

ललितकिशोरीजी लखनऊ के नवाब थे । उनके पास बहुत सम्पत्ति थी । ये दो भाई थे । दोनों भाइयों ने कृष्ण प्रेम में अपनी सारी सम्पत्ति और लखनऊ छोड़ दिया तथा ब्रज में आ गये । ललित किशोरीजी कहते हैं –

राधा नाम पर मैं वारी ।

मधुर मधुर मुरली में हित सों, गावत रसिक बिहारी ।

जा सुमिरे अनुराग होत दृग, युगल रूप हितकारी ।

ललित किशोरी छबि रस आगे, षट रस लागत खारी ॥

ललित मोहिनी और ललित किशोरीजी दो भाई थे, वे नवाब कहे जाते थे; उनके पास इतनी अपार सम्पत्ति थी, जितनी किसी के पास नहीं थी किन्तु उन्होंने समस्त सम्पत्ति का त्याग कर दिया और वृन्दावन में आये । उन्होंने पहले से ही कह दिया था कि जब मेरी मृत्यु हो जाए तो मेरे मृतक शरीर को कन्धे पर न ले जाया जाए । मेरे शरीर को पाँव पकड़कर ब्रजरज में घसींटते हुए मृतक कुत्ते की तरह ले जाया जाए, जिससे कि ब्रजरज मेरे शरीर पर लगती रहे । उनकी मृत्यु होने पर उनके शिष्यों ने उनकी इस आज्ञा का पालन किया । उन्हीं का यह पद है –

राधा नाम ही सों काम ।

राधा नाम परम धन मेरे, कल्पद्रुम अभिराम ।

राधा नाम लिए सुख दरसै, श्रीवृन्दावन धाम ।

ललित किशोरी रटो निरन्तर, राधा राधा नाम ॥

'राधा राधा नाम परम धन ।' ललित किशोरी जी ने अपने दूसरे पद में कहा – हे मन ! तू राधा नाम से ही प्रेम कर ले ।

राधा नाम सो चित राच ।

अपने भीतर मन (अन्तःकरण) को कागज़ बना लो और उस पर राधा-राधा लिखो ।

राधा नाम लेख रुचि शुचि सो, अन्तस कागद हाथ रे मन ।

राधा नाम अंग आभूषण, भूषित कर अंग नाम रे ।

सारे अंगों पर - मस्तक पर, गाल पर, नाक में, कान में, सभी जगह राधा नाम लिखो । राधा नाम का आभूषण धारण करो । श्यामसुन्दर भी अपने अंगों में राधा नाम लिखते हैं । इसी प्रकार जिनको गुरु मन्त्र मिला है अथवा नहीं मिला है, वे भी अपने अंगों पर राधा नाम लिखें ।

राधा नाम लिखी पाटुलिया, ललित किशोरी बांच राधा राधा ॥

सभी रसिकों के पद हम इसलिए गा रहे हैं क्योंकि बहुत से लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि हमारे पास मन्त्र नहीं है, हमारा कोई गुरु नहीं है; उन सबका उत्तर हम दे रहे हैं । किसी का कोई गुरु है चाहे नहीं है । गुरु है तो राधा-राधा गाओ और गुरु नहीं है तब भी राधा-राधा गाओ । कोई आवश्यकता नहीं है गुरु ढूँढने की, किसी सम्प्रदाय अथवा मन्त्र की; यह सभी रसिकों का मत है ।

राधा नाम ही सो नातो ।
जाके नाम लेत प्रियतम सो, परत प्रीति को खातो ।

राधा-राधा नाम लेने से श्यामसुन्दर के प्रेम के बहीखाते में अवश्य ही नाम लिख जायेगा ।

एक बार हम अपने गुरुदेव के पास गये और उनसे कहा कि मुझे मन्त्र दे दीजिये । उन्होंने कहा कि मन्त्र आदि कुछ नहीं देंगे । तुम राधा नाम रटो । सभी मन्त्र इसी में आ जायेंगे । तब से हम राधा नाम ही रटते हैं । न हमारा कोई मन्त्र है, न कोई तन्त्र है, न कोई गुरु है, न कोई शिष्य है ।

ललित किशोरी जो विश्वासे, पहले से मन रातो ।
होतो कुञ्ज निवास जगत क्यों, जनम जनम भटकातो ॥

'राधा' नाम में विश्वास होना चाहिए । ऐसा नहीं कि कोई आकर बहका दे तो हिल जाए । राधा नाम में विश्वास होता तो कुंजों में निवास मिलता, फिर राधा नाम की महिमा से संसार में इधर-उधर भटकना कभी न होता ।

राधा नाम को उर धार ।
मिलिहैं रसिक मुकुटमणि मोहन, आपुहि कुञ्जन द्वार ॥

'राधा' नाम के प्रभाव से श्यामसुन्दर अपने आप आयेंगे । बिना बुलाये अपने-आप ही कुंजों में श्यामसुन्दर आयेंगे । अपने आप मिलेंगे, तुमको बुलाना नहीं पड़ेगा ।

आठों याम छकेंगी अँखियाँ, छवि निकुंज विहार ॥

राधा नाम जपने वाले के लिए संसार का सभी सुख एकदम फीका लगेगा ।

ललित किशोरी फीके परिहैं, सरवस सुख संसार ॥

राधा नाम रटने वाले के लिए संसार के सभी सुख फीके लगेंगे । उसको वैराग्य की आवश्यकता नहीं है ।

'राधा नाम को आधार ।' राधा नाम को श्यामसुन्दर दिन-रात रटते हैं ।

'रसिक लालवर रटत निरंतर, सरबस रस को सार ॥'

जितने भी रस हैं, उन सबका सार राधा नाम है । चाहे तुम्हारे में कोई भी गुण नहीं है, तुम भले ही पापियों के सरदार हो किन्तु डरो नहीं, राधा-राधा रटो । तुम भले ही महापापी हो, आराम से सोओ, कोई साधन मत करो; केवल राधा-राधा रटो । कोई साधन भले ही मत करो, आराम से सोओ और राधा-राधा गाओ ।

सब गुण हीन मलीन दीन, अति पतितन में सरदार ।
ललित किशोरी तासु भरोसे, सोवत पाँव पसार ॥

सारे वेदों का, मन्त्रों का सार है राधा नाम, सारे कर्मों का सार है राधा नाम । उसको यदि हम लोग पकड़ लें तो अन्य किसी साधन की आवश्यकता नहीं है । किसी जप-तप, नेम, व्रत की जरूरत नहीं है । इसलिए केवल राधा-राधा रटो । बस, यही सभी रसिकों का मत है ।

राधा नाम की गति न्यारी ।
सपनेहुँ रसना पर आवत, होत बिबस बन कुञ्ज बिहारी ॥

अगर सपने में भी मुख से राधा नाम निकल गया तो कुञ्जबिहारी तुम्हारी सेवा करेंगे ।

सुन्दर दिव्य किशोर वैस नव, बानी मधुर रहत इक सारी ।

श्यामसुन्दर कैसे हैं ? सुन्दर हैं, दिव्य किशोर हैं । उनकी नई अवस्था १३-१४ वर्ष की है । ऐसा उनका स्वरूप है । जागने की क्या चलाई, सपने में भी अगर राधा नाम मुख पर आ गया तो अवश्य ठाकुरजी तुम्हारे वश में हो जायेंगे । श्यामसुन्दर सदा मीठे बने रहेंगे, कभी नाराज नहीं होंगे, किसी अपराध पर रूठेंगे नहीं । राधा नाम की यह महिमा है ।

श्रीवृन्दावन वास निरंतर पावत ललित किशोरी वारी ॥

राधा-राधा रटने से अपने आप धाम का फल मिलेगा । चाहे जियो चाहे मरो, राधा-राधा रटो ।

'राधा नाम को आराध ।' राधा नाम की आराधना करो ।

साधन अन्य त्यागि कै मनुवाँ, याही को दृढ साध ॥

अन्य सब साधनों को छोड़ दो । राधा नाम की ही दृढ़ता से साधना करो ।

मिलिहैं ललित किशोरी नागर, शोभा सिंधु अगाध ।
फलिहैं सकल मनोरथ ह्वै है, श्रीबन वास अबाध ॥

ब्रजवास मिलेगा, ब्रजवास का फल मिलेगा, केवल राधा-राधा गाओ । अगर तुम धाम में वास नहीं कर पाते हो तो कोई बात नहीं, राधा-राधा रटो, धाम का फल मिल जाएगा ।

राधा नाम अद्भुत चंद ।
बरसत नित श्रृंगार सुधारस, सरसत अमित अनंद ॥
जासु प्रभा अंतस तम नासन, जात सकल दुखद्वन्द ।

अनादिकाल का, अनन्तकाल का अँधेरा जो हमारे भीतर छाया है, वह 'राधा-राधा' गाने से नष्ट हो जायेगा ।

ललित किशोरी सदा एकरस, क्यों न भजसि मतिमंद ॥

एकरस ब्रजरस रहेगा, केवल राधा-राधा गाओ, और कुछ मत करो; सभी रसिकों का यही मत है ।

राधा राधा गावैं तहाँ दौर दौर जाओ प्यारे, राधा गुण जहाँ नहीं भूल के न डट रे ।

'राधा-राधा' गाने से श्यामसुन्दर अपने-आप दौड़ कर आते हैं, जहाँ पर राधागुणगान नहीं है, वहाँ भूलकर भी मत बैठो ।

राधा जू की चरचा सलोनी लोनी होय जहाँ, सुनि लगाय श्रवण तहाँ ते न हट रे ॥
राधा राधा नाम ही सों काम राख आठों याम, लाल बलवीर जगजाल कू न डट रे ।
ऐरे मन मीत तू भूल के न होय अचेत, राधा रट राधा रट राधा राधा रट रे ॥

गौ–सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN,BARSANA, MATHURA

Bank – Axis Bank Ltd , A/C – 915010000494364

IFSC – UTIB0001058 BRANCH – KOSI KALAN,

MOB. NO. – 9927916699

'श्रीबाबामहाराज' की जीवनी से सम्बन्धित संत श्रीशिवहरिदासजी कृत छप्पय

कठिन काल कलिकाल में धामनिष्ठ संत अवतरे ।

जन्मभूमि श्रीप्रयाग विप्रकुल कीन्ह उजागर । मात् हेमेश्वरी धन्य-धन्य पितु बलदेव नागर ॥
बाल्यकाल सों तेज पुंज संयम व्रतधारी । कमलनयन मुख सूर्य रूप कंचन उजियारी ॥
तजि निज गृह पितु-मात आप वृन्दावन धाए । अल्प आयु भए प्रखर और विद्या सब पाए ॥
भक्तियोग के निमित्त मिले गुरुवर सुखकारी । श्री "प्रियाशरण" शुभ नाम महामृदुमंगलकारी ॥
तब सद्गुरुबल पाय के फिर वैरागी व्रत धरे । कठिन काल कलिकाल में धामनिष्ठ संत अवतरे ॥

झाँकी लै निज रास की रासप्रेम उत्पन्न भयौ ।

लीला युगल की देख हिय अति विरह भर आवै । छिन-छिन भारी लगत रास को मन हुलसावै ॥
बरसाना लै शरण वास गहवरवन कीन्हो । श्रीराधारानी दरस पाय नित-नित सुख लीन्हो ॥
दृढ़ चरनन भई प्रीत रीति निज हिय में धारी । शरण गये तहाँ आप कृपा भई अति सुखकारी ॥
श्रीप्रियाशरण महाभाग कृपा करि नाम उच्चार्‌यौ । नाम पाय भये निष्ठ नाम निज हिय में धार्‌यौ ॥
श्रीगुरु आज्ञा पाए कै श्रीब्रजमण्डल महिमा कह्यौ । झाँकी लै निज रास की रास प्रेम उत्पन्न भयौ ॥

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें
सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

ACCOUNT NUMBER: **59109927338666**
IFSC CODE: **HDFC0000268**
BANK: **HDFC BANK LTD**
BRANCH: **BSA COLLEGE, MATHURA**
संपर्क :9927338666
www.maanmandir.org
आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

निष्काम 'कथा-कीर्तन' के प्रेरणा स्रोत 'बाबाश्री'

'भामिनीशरणजी, मानमन्दिर' के भावोद्गार

श्रीबाबा महाराज के द्वारा मान मन्दिर में 'सुबह का सत्संग' प्रारम्भ हुआ । सर्वप्रथम श्रीबाबा के द्वारा मान मन्दिर में रात्रि को कीर्तन होता था । तदनन्तर गह्वर वन की कुटी में उनके द्वारा संध्या कालीन सत्संग प्रारम्भ हुआ और फिर रात्रि ९ बजे से दो घंटे तक पद गान भी होता था । पद गान में श्रीबाबा महापुरुषों जैसे सूरदासजी, तुलसीदासजी और मीराजी के पद गाया करते थे । श्रीबाबा द्वारा रचित भी बहुत से पद और गीत हैं किन्तु उनको बाबा कम गाते हैं । सूर, तुलसी एवं मीराजी के पदों में बाबा की बहुत अधिक श्रद्धा है, इनके पदों को बाबा वेद मन्त्रों से भी बढ़कर मानते हैं । इन पदों की विशेषता यह है कि इनमें अभूतपूर्व दैन्य है । श्रीबाबा का कहना है कि भक्तिशास्त्रों के अनुसार भगवान् की शरणागति के छः अंग हैं, उनमें सबसे अन्तिम अंग है कार्पण्य अथवा दीनता । यदि कोई व्यक्ति शरणागति के पाँच अंगों से विहीन है किन्तु यदि उसमें कार्पण्य या दैन्य है तो उसे भगवान् की अहैतुकी कृपा से शरणागति के सभी लक्षणों से युक्त समझा जाएगा । सूरदासजी और तुलसीदासजी के जो विनय के पद हैं, उनमें विलक्षण दीनता है, इन पदों को गाने-सुनने से जीव के हृदय में दैन्य उत्पन्न होता है । इसीलिए श्रीबाबा रात्रि के पद गान में इन्हीं महापुरुषों के पदों को गाते हैं । इसी प्रकार मीराजी के पदों में भी जो प्रेम का, विरह का दर्द है, दैन्य है, वह अन्यत्र दुर्लभ है । मीराजी के पदों में तो श्री बाबा की सबसे अधिक आस्था है । जब भी वे मीराजी के पद गाते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं तो समय का उन्हें पता नहीं चलता । मीराजी के पदों में बाबा पूर्णतया डूब जाते हैं । इसीलिए श्रीबाबा के द्वारा पद गान युक्त जो संकीर्तन आराधना होती है, ऐसी आराधना सम्पूर्ण भारतवर्ष में कहीं नहीं होती है । संध्याकाल में मेरे समय श्रीबाबा के द्वारा राधासुधानिधि की कथा होती थी । यह श्रीराधारानी की अनुपम महिमा से युक्त ग्रन्थ है । श्रीबाबा महाराज भक्ति शास्त्रों के सिद्धान्तों सहित सुधानिधि के प्रत्येक श्लोक की महीनों तक अतिशय रसमयी व्याख्या किया करते थे । पाँच वर्षों तक उन्होंने लगातार सुधानिधि की बहुत ही रसीली कथा की । उसके बाद उन्होंने गोस्वामी नाभाजी कृत भक्तमाल की बहुत ही उत्कृष्ट कथा कही । पहले सुबह का सत्संग नहीं होता था, आगे चलकर वह भी आरम्भ हुआ । मानगढ़ में श्रीबाबा गीता, भागवत, रामायण एवं अन्य भक्ति शास्त्रों के सिद्धान्तों की अद्भुत व्याख्या करते हुए सुबह का सत्संग दिया करते थे । एकादशी के दिन ब्रज के अनेक गाँवों के ब्रजवासी श्रीबाबा के दर्शन के लिए आते थे, अतः उनके लाभ के लिए भी उन्होंने भक्त चरित्रों पर आधरित भक्तमाल का सत्संग प्रदान किया । इस प्रकार प्रतिदिन तो प्रातःकाल का सत्संग, संध्याकालीन सत्संग एवं रात्रिकालीन पदगान होता था और महीने की दो एकादशी पर ब्रजवासियों के हित के लिए विशेष सत्संग होता था । इसके अतिरिक्त संध्याकालीन सत्संग के बाद श्रीबाबा ने सन् २००४ में बच्चों के हित के लिए भी एक विशेष सत्संग चलाया, जिसका नाम था – 'प्रह्लाद सभा । ' इस सत्संग में अधिकतर चिकसौली और मानपुर गाँवों के बच्चे आते थे । ये बच्चे श्रीबाबा की प्रेरणा से शाम को कीर्तन करते हुए ही सत्संग में आते थे और कीर्तन करते हुए ही घर जाते थे । इन बच्चों को बाबाश्री प्रतिदिन महाभारत से बहुत ही प्रेरणादायक कथा सुनाते थे और उसके बाद इस कथा से क्या शिक्षा मिलती है, यह बताते थे और अगले दिन पूछते थे कि उस कथा से क्या शिक्षा मिली ? इसके साथ ही प्रतिदिन श्रीबाबा इन्हें सूरदासजी, तुलसीदासजी, मीराजी, कबीरदासजी आदि महापुरुषों के पद सिखाते और अच्छी प्रकार से उस पद का अर्थ बताया करते थे । अगले दिन श्रीबाबा बच्चों से इन पदों को पूछते तो बच्चे उन पदों को कंठस्थ कर लेते और बिना देखे ही उन पदों को गाकर सुनाते तथा इनका अर्थ भी बताया करते थे । श्रीबाबा ने बच्चों से कह दिया था कि अपनी संध्या फेरी में भी वे महापुरुषों के पदों को गाया करें तो बच्चे संध्या के सत्संग में आते और वहाँ से जाते समय सूर, तुलसी, मीरा और कबीर आदि महापुरुषों के पद गाया करते थे । ब्रजवासी बच्चों को इन पदों का ऐसा व्यसन लग गया था कि वे खेलते समय भी आनन्द से इन पदों को गाया करते थे । श्रीबाबा महाराज के इस सत्संग

से बच्चों की भक्ति में बहुत प्रगति हुई और उनके चरित्र का भी विकास हुआ । आज के स्कूलों में भक्तिविहीन शिक्षा दी जाती है, जिससे बच्चों के चरित्र का विकास नहीं हो पाता है और केवल भौतिक शिक्षा के कारण बच्चों का दिन-प्रतिदिन पतन होता दिखाई देता है । आज के विद्यालयों में भी श्रीबाबा की तरह ही बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा दिए जाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है ।

धाम सेवा के कार्य श्रीबाबा द्वारा बराबर होते रहे । ब्रज के सरोवरों के जीर्णोद्धार के क्रम में कोसी में गोमती गंगा, नन्दगाँव में कृष्ण कुण्ड और पावन सरोवर का पुनरुद्धार, बरसाने में वृषभानु कुण्ड के जीर्णोद्धार के बाद श्रीबाबा ने चिकसौली में दोहनी कुण्ड का जीर्णोद्धार करवाया । इसी कुण्ड के चारों ओर वृषभानुजी की गायों की खिरक थी और उनकी गायों का दूध इसी कुण्ड में एकत्रित किया जाता था । नन्दलाला स्वयं नन्दगाँव से आकर इन गायों का दूध दुहते और श्रीराधारानी गौ-दोहन के पात्र दोहनी में दूध को रखतीं, इसीलिए इस कुण्ड का नाम हुआ दोहनी कुण्ड । पाँच हजार वर्ष पूर्व बने इस महत्वपूर्ण कुण्ड पर भी कलियुग ने आघात किया तो पाँच सौ वर्ष पूर्व अकबर के वित्त मन्त्री टोडरमल ने इस कुण्ड के घाटों का जीर्णोद्धार करवाया था । उसके बाद पुनः यह कुण्ड दुर्दशा को प्राप्त हुआ, बच्चों के खेलने का मैदान बन गया तो धाम सेवा को समर्पित श्रीबाबा ने इस कुण्ड के उद्धार की योजना बनाई और उसी समय श्रीजी की कृपा से कुण्डों की खुदाई हेतु मान मन्दिर में एक स्वयं की जे.सी.बी. मशीन आ गयी । फिर क्या था, श्रीबाबा महाराज की आज्ञा से दोहनी कुण्ड की गहरी खुदाई हुई, इस कुण्ड को स्वच्छ जल से भरा गया और चारों ओर घाटों तथा दीवारों का जीर्णोद्धार किया गया । इसके बाद फिर कई गाँवों के ब्रजवासी श्रीबाबा के पास अपने गाँवों के कुण्डों के पुनरुद्धार हेतु अनुरोध करने के लिए आने लगे तो श्रीबाबा ने उन्हें निराश नहीं किया और आगे चलकर मान मन्दिर की जे.सी.बी. मशीन के द्वारा संकेत, हताना और चौमुँहा के कुण्डों का जीर्णोद्धार किया गया ।

श्रीबाबा के द्वारा 'ब्रज रक्षक दल' का भी निर्माण किया गया, ब्रज के सभी गाँवों के ब्रजवासियों को इसका सदस्य बनाया गया और उन्हें यह संकल्प दिलाया गया कि वे अपने गाँव की लीलास्थलियों की सुरक्षा के प्रति जागरूक बनें । ब्रज के वनों, पर्वतों एवं सरोवरों के संरक्षण के प्रति गम्भीर बनें । इसके साथ एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य जो ब्रज में श्रीबाबा ने किया, वह था गाँव-गाँव में प्रभात फेरी का प्रचार । श्रीबाबा ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा के बीच में स्थित गाँवों के ब्रजवासियों को स्वयं बड़े ही उत्साह के साथ प्रभात फेरी में जाने को कहा करते । श्रीबाबा उनसे कहते – 'ब्रजवासियो ! मैं तुम्हारे दरवाजे पर भिक्षा माँगने आया हूँ । भिक्षा में मुझे रोटी-दाल अथवा पैसा नहीं चाहिए । तुम मुझे भगवन्नाम की भिक्षा दो । प्रतिदिन अपने गाँव में भ्रमण करते हुए भगवन्नाम का दान करो, कीर्तन करो । ब्रज को ब्रज बनाओ, ब्रज की गलियों को कृष्ण गुण गान से भर दो । इससे तुम्हारे गाँव का, परिवार का, तुम्हारी इक्कीस पीढ़ियों का उद्धार होगा । इसमें कोई पैसा खर्च नहीं होता । दस-पाँच कदम तो भगवन्नाम का कीर्तन करते हुए अवश्य ही चला करो ।' श्रीबाबा के वचनों को सुनकर ब्रजवासी बड़े ही प्रभावित होते और उनके सामने ही प्रतिज्ञा करते कि अब हम प्रतिदिन प्रभात फेरी करेंगे तथा यात्रा के पड़ाव स्थलों पर ही अनेक ब्रजवासी अपनी कीर्तन मण्डली के साथ ब्रह्म मुहूर्त में कीर्तन करते हुए आ जाते । इस प्रकार श्रीबाबा के द्वारा ब्रजयात्रा के ही माध्यम से ब्रज के हजारों गाँवों में प्रभात फेरियाँ चलने लगीं । इसके साथ ही श्रीबाबा महाराज ने मान मन्दिर के साधुओं को भी प्रेरित किया कि वे ब्रज के गाँवों में जाकर प्रभात फेरी का प्रचार करें । पहले हम लोग श्रीबाबा की आज्ञा से डभारा गाँव में कीर्तन करते हुए भिक्षा माँगने जाते थे । एक बार बाबा ने कहा कि अब तुम लोग अन्य गाँवों में भी इसी प्रकार जाया करो, जिससे कि अन्य गाँवों में भी भगवन्नाम का प्रचार हो । उनकी आज्ञा से हम लोग दूसरे गाँवों में भी कीर्तन करते हुए मधुकरी के लिए जाने लगे । कुछ समय बाद श्रीबाबा ने एक जीप मँगवाई और मानगढ़ के साधुओं से कहा कि अब तुम लोग इस जीप पर बैठकर आसपास के गाँवों में कीर्तन करते हुए भिक्षा माँगने जाया करो, भिक्षा का तो बहाना होगा, वास्तविक कार्य तो यह होगा कि ब्रज के गाँवों में भगवन्नाम का प्रचार होगा । हम लोग सुबह के सत्संग के बाद बालभोग करके जीप पर सवार होकर बरसाना

के निकटवर्ती गाँवों में चले जाते और वहाँ प्रभातफेरी का प्रचार करते, भिक्षा माँगते तथा फिर संध्या काल के सत्संग के पूर्व आ जाते थे । इस तरह श्रीबाबा के द्वारा ब्रज के गाँवों में साधुओं को भेजकर प्रभात फेरी कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ । जब बरसाना के आसपास के बहुत से गाँवों में प्रचार हो गया तो एक दिन श्रीबाबा ने कहा कि अब तुम लोग ब्रज के दूर-दूर के गाँवों में जाओ और एक सप्ताह अथवा आठ-दस दिन वहीं रहकर भगवन्नाम का प्रचार करो । अब तो श्रीबाबा की आज्ञा से मान मन्दिर के साधु ब्रज के दूर-दूर के सभी गाँवों में जाने लगे और ब्रजवासियों की ही मधुकरी का शुद्ध अन्न माँगकर वहीँ गाँव के किसी मन्दिर में रुकते और प्रभात फेरी का प्रचार करते । श्रीबाबा का कहना था कि एक बात का ध्यान रखना कि यह प्रचार पूरी तरह निष्काम होना चाहिये । ब्रजवासियों से भिक्षा के अतिरिक्त उनसे कुछ भी मत लेना । किसी से धन लेना तो दूर, देने पर भी किसी से एक भी पैसा मत लेना और अपनी गाड़ी में डीजल भी स्वयं ही डलवाना, डीजल के लिए भी ब्रजवासियों से पैसा मत लेना । श्रीबाबा महाराज के इन कड़े निर्देशों का पालन करते हुए ही ब्रज के हजारों गाँवों में प्रभात फेरी का प्रचार किया गया और यह निष्काम प्रचार पूर्णतया सफल हुआ । श्रीबाबा महाराज की आज्ञानुसार ढोलक और माइक भी प्रभात फेरी करने वाले ब्रजवासियों को सभी गाँवों में निःशुल्क वितरित किये गये । यहाँ तक कि श्रीबाबा की आज्ञा से उन्हें एक प्रभात फेरी की पुस्तक, एक श्रीबाबा महाराज द्वारा रचित रसिया रासेश्वरी की पुस्तक और एक मान मन्दिर की गतिविधियों का वीडियो कैसेट भी निःशुल्क दिया जाता था । श्रीबाबा महाराज के निर्देशों का पालन करते हुए ब्रज के हजारों गाँवों में जो निष्काम प्रचार किया गया, उसके प्रभाव से ब्रज के सभी गाँवों के ब्रजवासी ब्रह्म मुहूर्त में जागकर ढोलक और माइक के साथ धूमधाम से प्रभात फेरी करने लगे, ब्रज में रसमयी भक्ति की धारा चारों ओर प्रवाहित होने लगी । कुछ समय बाद श्रीबाबा की आज्ञा से एक बड़ा सा ट्रक भी इसी प्रभात फेरी कार्यक्रम को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए ख़रीदा गया । श्रीबाबा ने कहा कि बड़े से ट्रक में अधिक प्रचारक नाम प्रचार हेतु जा सकते हैं । अबकी बार श्रीबाबा ने इस कार्य के लिए मान मन्दिर की साध्वियों को भी प्रेरित किया । उनसे बाबा ने कहा कि तुम लोग संध्या के सत्संग के बाद इस ट्रक पर बैठकर बरसाना के निकट के ही गाँवों में जाया करो और रात्रि कालीन कीर्तन के पहले आ जाओ । इस प्रकार अब श्रीबाबा की प्रेरणा से साधुओं के साथ मान मन्दिर की साध्वियाँ भी नाम कीर्तन के प्रचार हेतु ब्रज के गाँवों में जाने लगीं ।

प्रचार में गाँवों में किस प्रकार प्रवचन किया जाए, आगे चलकर श्रीबाबा ने इसी लक्ष्य से मान मन्दिर में ही प्रातःकालीन सत्संग के पश्चात् यहाँ के साधुओं एवं साध्वियों को तैयार करना प्रारम्भ किया । इसके लिए श्रीबाबा बताते कि व्याख्यान देने वाले को शास्त्रों का अच्छी प्रकार ज्ञान होना चाहिए, उसे हर बात शास्त्रों के प्रमाण के अनुसार ही बोलना चाहिए, मनमाने ढंग से कुछ भी नहीं कहना चाहिये । बोलते समय भी श्रीबाबा समझाते कि जल्दी-जल्दी नहीं धीरे-धीरे, एक-एक शब्द को जमाकर बोलना चाहिए, जिससे कि श्रोताओं को समझ में आये कि क्या कहा जा रहा है ? श्रीबाबा बताते कि जिस प्रकार एक अच्छा निशानेबाज एकाग्रता पूर्वक अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए लक्ष्य पर ही निशाना लगता है, उसी प्रकार एक कुशल वक्ता को बोलते समय यह देखना चाहिए कि हम जो बोल रहे हैं, उसका श्रोताओं पर कुछ प्रभाव पड़ रहा है या नहीं, उन्हें कुछ समझ में आ रहा है कि नहीं ? ऐसा न हो कि वक्ता अपने मनमाने ढंग से बोलता रहे और श्रोताओं को कुछ समझ में न आये अथवा उन्हें नींद आने लगे । श्रीबाबा ने मान मन्दिर की साध्वियों को विशेष रूप से व्याख्यान देने के लिए तैयार किया । बोलते समय उनके द्वारा जब भी त्रुटि होती तो श्रीबाबा उनकी उस त्रुटि को बताकर और स्वयं बोलकर दिखाते कि इस वाक्य को शीघ्रता के साथ नहीं एक-एक अक्षर को दृढ़ता के साथ बोलना चाहिए । श्रीबाबा ने बड़ी ही मेहनत के साथ यहाँ के साधुओं एवं साध्वियों को समाज के समक्ष भक्ति का प्रचार करने, व्याख्यान देने के लिए तैयार किया । इसके बाद श्रीबाबा ने मान मन्दिर की साध्वियों के लिए ब्रज के गाँवों में प्रचार करने के लिए अलग से प्रभात फेरी सम्मलेन करवाए । ये साध्वियाँ श्रीबाबा के सिद्धान्तों का पालन करते हुए बड़ी ही कुशलता के साथ गाँवों में हरिनाम का प्रचार करने लगीं । इसके अतिरिक्त भी ब्रजवासियों के लाभ हेतु श्रीबाबा

के द्वारा गाँव-गाँव में विशाल प्रभात फेरी सम्मलेन आयोजित करवाए गये, जिनमें स्वयं बाबा महाराज जाया करते थे । श्रीबाबा के आगमन का समाचार सुनते ही गाँवों में ब्रजवासियों की बहुत बड़ी भीड़ उनके स्वागत और उनके प्रवचन को सुनने के लिए उमड़ पड़ती । एक बार तो श्रीबाबा महाराज ने माताजी गौशाला में ही एक महीने का प्रभात फेरी सम्मलेन करवाया । उस सम्मलेन में ब्रज के हजारों गाँवों से कीर्तन मंडलियों के सदस्य आते, कीर्तन करते, सबके भोजन प्रसाद की उसमें व्यवस्था रहती । उस सम्मलेन में श्रीबाबा का प्रातः और सायंकालीन सत्संग भी होता तथा रात्रि का पद गान व नृत्य आराधना भी होती । इस सम्मलेन से ब्रजवासियों को बहुत लाभ हुआ । श्रीबाबा महाराज ने कहा कि ब्रजवासियों के हित के लिए इस तरह के कार्यक्रम ब्रज में पहले कहीं नहीं हुए, जबकि ब्रज में भक्ति के प्रचार-प्रसार के लिए ऐसे कार्यक्रमों की बहुत अधिक आवश्यकता है ।

अभय व अकिञ्चन विद्यार्थी 'बाबाश्री'

परम भावुक संत 'श्रीसखीशरणजीमहाराज' द्वारा कथित 'श्रीबाबा' से सम्बन्धित संस्मरण

श्रीबाबा महाराज की दीदी कानपुर के डिग्री कॉलेज में प्रोफ़ेसर थीं । उस समय बाबाश्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ते थे । कभी-कभी वे दीदी से मिलने कानपुर जाया करते थे । एक बार बाबामहाराज कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन पर बैठे थे, वहाँ उनको एक ब्रज के सन्त मिल गये । श्रीबाबा ने उनको प्रणाम किया और पूछा – 'महाराजजी ! क्या मुझे भी कभी ब्रजवास मिल सकता है ?' सन्त ने कहा – 'अवश्य मिल सकता है ।' श्रीबाबा ने कहा – 'मैं अपने माता-पिता का इकलौता बेटा हूँ, फिर मुझे ब्रजवास कैसे मिल सकता है ?' सन्त ने कहा – 'ब्रजवास मिले या न मिले परन्तु तुम प्रतिदिन पाँच या दस बार कहा करो कि मैं ब्रजवास करूँगा ।' श्रीबाबा अपने घर में नियम से प्रतिदिन इस प्रकार कहने लगे तो आगे चलकर उनको ब्रजवास मिल गया ।

श्रीबाबा के पिताजी पुलिस विभाग में आई. जी. ऑफिसर थे । बाबाश्री माताजी के बहुत लाड़ले बेटे थे । कभी-कभी बाबा ट्रेन के द्वारा प्रयाग से प्रतापगढ़ जाते थे और वहाँ मनगढ़ में कृपालुजी के सत्संग में, उनके कीर्तन में सम्मिलित होते थे । श्रीबाबा ने प्रयाग विश्विद्यालय में अध्ययन करने के साथ ही संगीत शास्त्र का भी बहुत अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था । श्रीबाबा महाराज के संगीत के ज्ञान, उनके बढ़िया गायन-वादन के कारण कृपालुजी उनसे बहुत प्रभावित हुए ।

आगे चलकर श्रीबाबा घर छोड़कर चित्रकूट के जंगल में यत्र-तत्र विचरण किया करते थे । उस समय उनकी पन्द्रह या सोलह वर्ष की आयु थी । एक हिंसक जंगली जानवर वन में श्रीबाबा महाराज का बार-बार पीछा करता था । उस समय श्रीबाबा राधे-राधे नाम का उच्च स्वर से उच्चारण किया करते थे । इसके प्रभाव से वह दूर भाग जाता था परन्तु पुनः पीछा करने लगता था, तब श्रीबाबा पुनः जोर से राधे-राधे पुकारते थे । वह जंगली पशु पुनः दूर भाग जाता था और अन्त में वह घने जंगल के भीतर चला गया, फिर नहीं दिखाई दिया । जंगल में पर्वत के ऊपर किसी वृक्ष के नीचे एक सन्त रहते थे । श्रीबाबा उनके पास गये और उन्हें प्रणाम किया । सन्त ने कहा – 'यह घनघोर जंगल है । यहाँ सिंह, बाघ और रीछ आदि हिंसक पशु रहते हैं । वे यहाँ स्थित झरने में पानी पीने आते हैं ।' उन सन्त ने श्रीबाबा को बहुत-सी रोटियाँ दीं और कहा – 'इन्हें खा लो और इस झरने का पानी पी लो, सब भोजन हजम हो जाएगा । इस झरने का पानी पाचन के लिए बहुत ही लाभदायक है । सबेरे फिर भूख लगेगी ।' श्रीबाबा ने कहा – 'महाराजजी ! शेर गरज रहा है ।' सन्त ने कहा – 'शेर गरज नहीं रहा है, मठार रहा है । बहुत खाने के बाद जब डकार लेते हैं तो उसे मठारना कहते हैं । उसकी गर्जना तो इतनी भयंकर होती है कि कोसों दूर तक सुनायी देती है ।' एक तलवार श्रीबाबा को देते हुए सन्त ने कहा – 'यह तलवार हाथ में ले लो, जब शेर आये तो उसके पेट में यह तलवार घोंप देना । डरना नहीं, वह मरने के भय से भाग जाएगा ।' श्रीबाबा उस समय वहीं बैठकर कीर्तन करने लगे । सन्तजी उन्हें कीर्तन करते देखकर बहुत प्रसन्न

हुए और पूछा – 'बेटा ! तुम्हें यहाँ डर नहीं लगता है ?' श्रीबाबा ने कहा – 'यह शरीर तो श्रीकृष्ण को समर्पित है, अतः मुझे डर नहीं लगता है । मैं शेर से इस तलवार के द्वारा लड़ूँगा ।' सन्त हँसने लगे और बोले – 'तुम शूरवीर हो । ऐसा व्यक्ति ही जंगल में भजन कर सकता है । अब कुटिया के अन्दर आ जाओ । शेर के आने का समय हो गया है ।'

श्रीबाबा जब मानमन्दिर में संस्कृत का अध्ययन करते थे तो मन्दिर की दीवाल ही उनकी कॉपी थी । कभी उन्होंने स्याही-दवात और कलम नहीं रखा । जब वे वृन्दावन पढ़ने गये तो श्री झाजी पढ़ाते थे । वहाँ एक गोपाल दास नामक महात्मा था । वह दूसरे विद्यालय में पढ़ता था । उसने झा जी को चुनौती दी थी कि परीक्षा में आपके विद्यालय से अधिक अंक मैं प्राप्त करूँगा । उसने श्रीबाबा को भी अधिक अंक प्राप्त करने की चुनौती दी, जबकि वे उससे अधिक विद्वान् थे । जब परीक्षा का दिन आया तो झा जी ने बाबा से कहा कि तुम पुस्तक साथ में रख लो और उससे नक़ल कर लेना । गोपालदास से कम अंक प्राप्त करके कहीं मेरी नाक मत कटवा देना । श्रीबाबा ने कहा – 'गुरुजी ! मैंने अपने जीवन में कभी भी परीक्षा में नक़ल नहीं की है और न कभी करूँगा किन्तु मेरे पास लिखने के लिए कलम नहीं है ।' झा जी ने पूछा कि अभी तुम कैसे लिखते थे ? श्रीबाबा ने कहा – 'खड़िया और कोयले से लिखता था ।' उनकी बात सुनकर झा जी हँसने लगे । उन्होंने श्रीबाबा को लिखने के लिए कलम दी । मैं उस समय सुनरख से भिक्षा माँगकर लाता था । झा जी यमुनाजी की तरफ बिहारीजी के बगीचे से थोड़ा दूर रहते थे । वहाँ गोपालजी के मन्दिर में उनके कुछ छात्र पुजारी थे । मन्दिर से पचास गज अलग एकान्त स्थान में उनकी बाउन्ड्री और कुटिया थी । वहीं पर मैं और बाबा भी रहा करते थे । मैं प्रतिदिन सुनरख से भिक्षा माँगकर लाता था । हम लोग वहाँ डेढ़ महीने रहे । एक दिन श्री झा जी ने बाबा से पूछा – 'तुम्हारे भोजन की क्या व्यवस्था है ?' श्रीबाबा ने कहा – 'ये महात्मा सुनरख से प्रतिदिन भिक्षा माँग लाते हैं ।' झा जी ने पूछा – 'भिक्षा में क्या मिलता होगा ?' मैंने बताया – 'रूखी-सूखी रोटियाँ मिलती हैं, उन्हीं को ले आता हूँ । साग-सब्जी तो मिलती नहीं है । कभी अचार मिल जाता है, कभी हरी मिर्च मिल जाती है । हमारे बाबाश्री तो किसी से कुछ माँगते नहीं हैं । गोपियाँ रूखा-सूखा जो कुछ भी दे देती हैं, उसी को खा लेते हैं ।' श्रीझाजी बाबा से बोले – 'अरे ! आपको तो बड़ा कष्ट है । आप भिक्षा की रूखी-सूखी रोटी खाकर पढ़ाई करते हैं ।' इसके बाद तो झा जी मेरे और श्रीबाबा के लिए अपने घर से बीसों रोटियाँ तथा दाल-सब्जी भिजवाने लगे । उनके विद्यार्थी ही हम लोगों के स्थान पर भोजन दे जाया करते थे । दस-बारह दिन मैं श्रीबाबा के साथ वृन्दावन में रहा । तदनन्तर श्रीबाबा ने मुझसे कहा – 'अब तुम बरसाना जाओ, यहाँ मेरे भोजन की व्यवस्था हो गयी है । अब तुम गह्वरवन में मेरी कुटिया की देखभाल करो ।' डेढ़ महीने वृन्दावन में रहकर परीक्षा देकर श्रीबाबा पुनः गह्वरवन में अपनी कुटिया में आ गये । श्रीबाबा ने संस्कृत-व्याकरण की उस परीक्षा में सम्पूर्ण भारत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था । भारत सरकार की ओर से तीन हजार रुपये स्कॉलरशिप में प्राप्त हुए तथा एक स्वर्णपदक भी मिला था । श्रीबाबा ने उसे वापस कर दिया और कहा कि मैं राज्यधन को ग्रहण नहीं करूँगा । राज्य धन मुझे स्वीकार नहीं है ।

संकीर्तन-संप्रेरक रसावतार 'श्रीमच्चैतन्य महाप्रभुजी'

श्रीचैतन्य महाप्रभु को कलि-पावनावतार कहा जाता है । वे स्वयं श्रीकृष्ण ही थे, जो कलियुग में एक भक्त के रूप में प्रकट हुए थे । उन्होंने कलियुग के पतित से पतित, महा दुराचारी जीवों का केवल उद्धार ही नहीं किया बल्कि उन्हें देव दुर्लभ कृष्ण प्रेम प्रदान किया, जैसा कि उनके किसी भी अवतार में आज तक कभी नहीं हुआ था । उन्होंने बिना किसी अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग किये ही केवल अपनी करुणा के द्वारा ही महापापी नराधमों का उद्धार किया । सतयुग, त्रेता और द्वापर युग के बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को भी दुर्लभ कृष्ण प्रेम का उन्होंने कलियुग के पतित प्राणियों को बिना किसी प्रकार का भेदभाव किये ही बड़ी उदारता के साथ वितरण किया, यहाँ तक कि उन्होंने जंगली हिंसक पशुओं जैसे शेर-चीते-

हाथियों आदि को भी कृष्ण प्रेम का दान कर दिया । जिस कृष्ण भक्ति या कृष्ण प्रेम को सैकड़ों जन्मों के साधन से भी नहीं प्राप्त किया जा सकता, श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कलिकाल के जीवों को उसे खुले दिल से लुटाया ।

जिस समय महाप्रभु ने अवतार लिया था, उस समय पूरे भारत में यवनों का शासन था । बंगाल भी यवनों के शासन के अधीन था । इसके अतिरिक्त बंगाल में शाक्त मत का बहुत अधिक प्रचार था । वहाँ के लोग काली माता की उपासना करते थे और उन्हें पशुओं की बलि भेंट करते थे । माँस और मदिरा का व्यसन वहाँ बुरी तरह फैला हुआ था । वहाँ के लोग वैष्णव धर्म अथवा कृष्ण भक्ति तो जानते ही नहीं थे, इसके विपरीत वे लोग वैष्णव धर्म, कृष्ण भक्ति के प्रबल विरोधी थे । पूरे भारत में बंगाल की स्थिति सबसे अधिक तमोगुणी थी । इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने चैतन्य महाप्रभु के रूप में बंगाल में ही प्रकट होकर अन्धकार में बुरी तरह डूबे इस प्रान्त को अपने प्रचार का केन्द्रबिन्दु बनाया । उन्होंने अपना प्रचार किस प्रकार किया ? श्रीमद्भागवत में शुकदेवजी ने परीक्षितजी को जब कलियुग के दोषों के बारे में विस्तार से सुनाया तो अत्यन्त चिन्तित होकर राजा परीक्षित ने पूछा कि भगवन् ! इस कलियुग में तो बहुत से दुर्गुण हैं, इसमें मुझे एक भी सद्गुण नहीं दिखाई देता, ऐसी दशा में कलियुग के प्राणियों का उद्धार कैसे होगा ? उस समय शुकदेवजी ने बताया कि वैसे तो कलियुग दोषों का खजाना ही है किन्तु इसमें एक ही सबसे बड़ा गुण ऐसा है, जिसके कारण यह सतयुग, त्रेता और द्वापर आदि सभी युगों से आगे चला गया है और वह गुण यह है कि सतयुग में ध्यान करने, त्रेता में बड़े-बड़े यज्ञों के द्वारा भगवान् की आराधना करने तथा द्वापर में उनकी सेवा-पूजा करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, कलियुग में केवल भगवान् का संकीर्तन करने से ही उस फल की प्राप्ति बड़ी ही आसानी से हो जाती है । कलियुग में केवल कीर्तन करने से ही मनुष्य सभी आसक्तियों से मुक्त हो जाता है और उसे परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है । इस तरह सभी शास्त्रों के सार श्रीमद्भागवत में शुकदेवजी ने डंके की चोट पर यह निर्णय कर दिया कि कलियुग के दोषों को जीतने का, सरलता से भवसागर पार करने का एकमात्र साधन भगवान् का कीर्तन ही है । कलिकाल में भक्ति का प्रचार करने के लिए भगवान् के ही धाम से अनेक आचार्य-महापुरुष प्रकट हुए, जैसे श्रीरामानुजाचार्यजी, श्रीनिम्बार्काचार्यजी, महाप्रभु वल्लभाचार्यजी, श्रीमध्वाचार्यजी, श्रीविष्णुस्वामीजी, श्रीरामानन्दजी आदि, इन सभी महापुरुषों ने समस्त भारत में भक्ति का प्रचार किया, अनेकानेक पतित जीवों को भगवान् के सम्मुख किया किन्तु श्रीमद्भागवत में जिस युगधर्म 'संकीर्तन' को ही कलियुग का एकमात्र साधन बताया गया है, वास्तव में देखा जाए तो उसका व्यवहारिक आचरण के द्वारा समाज में प्रचार एकमात्र श्रीचैतन्य महाप्रभु के द्वारा ही किया गया । उनके पहले किसी अन्य आचार्य के द्वारा नृत्य और गान के माध्यम से संकीर्तन का प्रचार नहीं किया गया । महाप्रभु ही एकमात्र ऐसे आचार्य थे, जिन्होंने युग धर्म संकीर्तन आन्दोलन का पूरे देश में प्रचार-प्रसार किया । कीर्तन का अर्थ है एक व्यक्ति के द्वारा किया जाने वाला कीर्तन तथा संकीर्तन का मतलब है अनेक भक्तों के द्वारा समूह में किया जाने वाला कीर्तन । इसके अतिरिक्त संकीर्तन में संगीत के माध्यम से भगवान् की आराधना की जाती है । संगीत के तीन भाग हैं – गाना, नृत्य करना और वाद्य बजाना । महाप्रभु ने संगीत की इन तीनों विधाओं के माध्यम से समाज में संकीर्तन का प्रचार किया; संगीत से मन सरस होता है, जब मन को रस मिलता है, तभी वह अनादि काल के विषयों की आसक्ति को छोड़ पाता है । इसीलिए सूरदासजी ने कहा है –

"जो सुख होत गोपालहि गाये । सो सुख होत न जप तप कीन्हे, कोटिक तीरथ नहाये ॥"

गोपालजी के गुणों को गाने से, उनका कीर्तन करने से जिस आनन्द की प्राप्ति होती है, वैसा आनन्द जप करने, तप करने और करोड़ों तीर्थों में नहाने अथवा अन्य साधन करने से नहीं प्राप्त होता है । संगीत के माध्यम से कीर्तन करना भगवान् की रसोमयी उपासना है । इसमें गाने, नृत्य करने और वाद्य जैसे ढोलक-मृदंग आदि अनेक वाद्य बजाने से एक अद्भुत रस की प्राप्ति होती है, जिससे जीव का मन बड़ी आसानी से भगवान् की ओर खिंचता है, ऐसा अन्य साधनों में नहीं होता है । इसीलिए श्रीचैतन्य महाप्रभुजी ने अपने भक्तों के साथ मिलकर पूरे बंगाल में और फिर पूरे भारत में संकीर्तन के माध्यम से नृत्य, गान और वाद्य के द्वारा ही कृष्ण प्रेम का प्रचार किया ।

जिस समय महाप्रभु गृहस्थ जीवन में रहकर अपने भक्तों के साथ नवद्वीप-मायापुर में संकीर्तन का प्रचार करते थे तो वहाँ के लोग कीर्तन के महत्त्व को नहीं समझते थे, वे इसे बेकार का हल्ला-गुल्ला, शोर-शराबा समझते थे और वाम मार्गी कहकर महाप्रभु की निन्दा किया करते थे । महाप्रभु ने जब देखा कि ये लोग मेरे गृहस्थ होने के कारण संकीर्तन के महत्त्व को नहीं समझ रहे हैं, इसीलिए समाज के कल्याण हेतु कीर्तन का प्रचार करने के लिए ही उन्होंने सन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया क्योंकि उस समय भारतवर्ष में सन्यासियों का सम्मान था और उनके उपदेश को लोग ध्यान से सुनते और उसका पालन भी करते थे । महाप्रभु को स्वयं के सम्मान की इच्छा नहीं थी लेकिन संकीर्तन के माध्यम से समाज का उद्धार करने के लिए ही उन्होंने अपनी विधवा वृद्ध माता तथा नवविवाहिता युवा पत्नी का अनाथ की तरह त्याग कर दिया और रात के अँधेरे में उनको सोते हुए घर से चल दिए । उन्होंने समाज में उपदेश तो बहुत ही कम जगह दिए, अधिकतर तो वे संकीर्तन के माध्यम से ही नगर कीर्तन करते हुए प्रचार करते थे । वे नगर कीर्तन करते हुए जहाँ से भी निकल जाते, उसके प्रभाव से अत्यधिक पापी लोग भी कृष्णप्रेम में रंगकर नाचने-गाने लगते थे । अकेले केवल अपने ही कल्याण की दृष्टि से भजन का प्रचार न करते हुए महाप्रभु ने परोपकार (अपने ही साथ दूसरों के भी कल्याण) सम्बन्धी भजन हेतु नाम कीर्तन को प्रधानता दी । उनका यह सपष्ट मत है –

'जपि लेइ हरि नाम करिया निज साधन, उच्च स्वर संकीर्तन करे पर उपकारे ।' (श्रीचैतन्यचरितामृत)

जप करने से तो केवल एक ही व्यक्ति का कल्याण होता है, जबकि जोर-जोर से नामकीर्तन करने से तो अनेक जीवों का उद्धार होता है । **'पशु पक्षी कीट भृंग बोलि ते न पारे, शुनि लेई हरि नाम तारा सब तरे ।'** (श्रीचैतन्यचरितामृत)

पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि जीव 'हरिनाम' नहीं ले सकते किन्तु जब कीर्तन किया जाता है तो ये जीव भी भगवान् का नाम **सुनते हैं, उसके प्रभाव से इनके पापों का नाश होता है और ये भी चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं ।**

बहुत से लोगों का ऐसा विचार है कि चैतन्य महाप्रभु स्त्रियों से दूर रहते थे, स्त्री संग के वे कड़े विरोधी थे किन्तु ऐसा नहीं है । महाप्रभु ने स्त्री-पुरुष का भेदभाव न करते हुए सभी का समान रूप से कल्याण किया । जब वे भक्ति का प्रचार करते हुए भारत में भ्रमण कर रहे थे तो एक स्थान पर उनकी भेंट कुछ वेश्याओं से हुई । वेश्या तो बहुत ही पतित स्त्री होती है, कोई भी शरीफ आदमी वेश्या से बात करना पसन्द नहीं करेगा किन्तु महाप्रभु तो पतित पावन थे, उन्होंने उन वेश्याओं से भी घृणा नहीं की, उन्हें भक्ति का उपदेश किया, नाम कीर्तन की महिमा बताई और इस प्रकार उन वेश्याओं का भी उद्धार कर दिया । इसी प्रकार जब वे अपने अन्तिम समय में जगन्नाथ पुरी में रहते थे तो प्रतिदिन मन्दिर में प्रभु का दर्शन करने जाते थे । एक बार वे आरती के समय मन्दिर में जगन्नाथ जी का दर्शन कर रहे थे, उसी समय एक भक्त स्त्री आई, मन्दिर में उस समय बहुत भीड़ थी । वह स्त्री जगन्नाथजी की आरती का दर्शन करने के लिए इतनी व्याकुल हो गयी कि उसे अपने शरीर की भी सुध-बुध नहीं रह गयी और वह महाप्रभु के कन्धे पर चढ़ गयी तथा जगन्नाथजी का दर्शन करने लगी । महाप्रभु ने अपने सेवक गोविन्द से कह रखा था कि तुम मुझे स्त्री स्पर्श से बचाये रहना, इसलिए जब वह स्त्री महाप्रभु के कन्धे पर चढ़ गयी तो गोविन्द ने उस स्त्री को फटकारा लेकिन महाप्रभु ने गोविन्द को ऐसा करने से रोक दिया और कहा कि इस समय यह स्त्री भगवान् के प्रेम में ऐसा डूब गयी है कि इसे अपने शरीर का भी कोई होश नहीं है, इसलिए इसे रोको मत । इससे पता पड़ता है कि महाप्रभु भक्त स्त्रियों का कितना सम्मान करते थे । जिस समय महाप्रभु नवद्वीप में श्रीवास पण्डित के घर में कीर्तन करते थे, उस समय वहाँ अनेक गृहस्थ भक्त महाप्रभु के कीर्तन में आते थे और उनके साथ में उनकी पत्नियाँ भी होती थीं लेकिन महाप्रभु किसी स्त्री को कीर्तन में आने के लिए कभी मना नहीं करते थे । महाप्रभु साक्षात् श्रीकृष्ण ही थे और उनके अवतार का एक सबसे मुख्य उद्देश्य था श्रीराधारानी के दिव्य प्रेम का आस्वादन करना । द्वापर युग में जब श्रीकृष्ण ब्रज छोड़कर द्वारका में रहने लगे, उस समय उनके विरह में राधारानी के हृदय में प्रेम के बहुत ही उच्च कोटि के भाव प्रकट हुए, ऐसे भाव कभी श्रीकृष्ण के हृदय में भी नहीं प्रकट हुए थे क्योंकि प्रेम की अधिष्ठात्री देवी, प्रेम की देवी तो एकमात्र श्रीराधिका रानी ही हैं । प्रेम के ऐसे ऊँचे भावों का श्रीकृष्ण

भी आनन्द लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने कलियुग में अवतार लिया और राधा रानी के दिव्य गोरे अंग की कान्ति को धारण करके गौरांग बने तथा हृदय में राधारानी के भाव को धारण किया । महाप्रभु अपने जीवन के अन्तिम समय में राधारानी के दिव्य प्रेम के भावों को समझने के लिए जगन्नाथ पुरी के गम्भीरा मन्दिर में राधा भाव में रहा करते थे और श्रीकृष्ण के विरह में जो दशा श्रीराधारानी की होती थी, वैसा ही विरह महाप्रभु के भी शरीर में देखा गया । कभी वे रात को कृष्ण प्रेम में तड़पते हुए समुद्र के किनारे पहुँचते, उन्हें पुरी का समुद्र वृन्दावन की यमुना ही मालूम पड़ता और वे प्रेम के आवेश में समुद्र में छलांग लगा देते थे । वे शरीर से जगन्नाथ पुरी में रहते हुए भी मन से सदा ब्रजभूमि का ही चिन्तन करते रहते थे । इस तरह उन्होंने संसार को राधारानी की महिमा से, उनके दिव्य प्रेम की महिमा से परिचित कराया । उनके पहले लोग राधारानी की महिमा से अनजान ही थे । ब्रजभूमि की भी महिमा लोग नहीं जानते थे, महाप्रभु ने संसार के लोगों को ब्रज की महिमा का ज्ञान कराया, उन्हें ब्रज भक्ति का उपदेश दिया । उन्होंने अपने अधिकतर सभी अनुयायियों को ब्रज में भेजा और अखण्ड ब्रज वास करते हुए निरन्तर ब्रज भूमि की सेवा करते हुए ब्रज में ही भजन करने का उपदेश दिया । महाप्रभु की ही आज्ञा से श्रीरूप गोस्वामी, श्री सनातन गोस्वामी, श्रीरघुनाथ गोस्वामी, श्रीजीवगोस्वामी, श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी तथा श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी ने अखण्ड ब्रजवास किया, ब्रज के लुप्त हो रहे लीला स्थलों की रक्षा की तथा अपने ग्रन्थों के माध्यम से भी संसार को ब्रज भक्ति की शिक्षा दी । श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीजी ने तो महाप्रभु की आज्ञा से अखण्ड ब्रजवास करते हुए ब्रजभूमि की दिव्य महिमा को प्रकट करने वाले ग्रन्थ 'वृन्दावन महिमामृत शतक' को लिखा, जिसमें सैकड़ों श्लोकों में उन्होंने ब्रज वृन्दावन धाम की अनुपम महिमा का वर्णन किया है ।

श्रीचैतन्य महाप्रभु ने आठ श्लोकों में भक्ति के मूलभूत सिद्धान्तों की शिक्षा दी है, जिन्हें शिक्षाष्टक कहते हैं । उसका सबसे प्रथम श्लोक दैन्य की शिक्षा देता है । महाप्रभु ने कहा है –

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना । अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥

अपने को घास के तिनके से भी अधिक नीचा समझे, वृक्ष से भी अधिक सहनशील बने, स्वयं मान-सम्मान की इच्छा बिलकुल न रखे तथा दूसरों का सदा सम्मान करता रहे । ऐसी स्थिति में ही मनुष्य सदा कीर्तन करने का अधिकारी होता है । इस प्रकार महाप्रभु ने कीर्तन करने के लिए, जप करने के लिए, भक्ति करने के लिए दीनता अर्थात् अहंकार को छोड़कर अपने को सबसे छोटा समझना अत्यधिक आवश्यक बताया है । दैन्य के बिना अहंकार आ जाने से मनुष्य भक्तापराध करता है, उससे भक्ति का नाश हो जाता है । महाप्रभु ने नवद्वीप में कीर्तन करने वाले अपने प्रचारकों से कहा था कि आप लोग गली-गली में सभी लोगों के पैर छूकर उनसे भगवान् का नाम लेने की भिक्षा माँगो । स्वयं महाप्रभु भी सबके साथ दीनता का व्यवहार करते थे । जिस समय में वे काशी में कृष्ण भक्ति का प्रचार कर रहे थे तो काशी के प्रकाण्ड विद्वान् और सन्यासियों के आचार्य प्रकाशानन्द जी चैतन्य महाप्रभु का बहुत विरोध करते थे । भक्तों ने सन्यासियों का एक सम्मलेन आयोजित किया, जिसमें प्रकाशानन्दजी को बुलाया गया तथा महाप्रभु को भी बुलाया गया था । उस सम्मलेन में प्रकाशानन्दजी तो सभी सन्यासियों के साथ एक ऊँचे सिंहासन पर बैठे थे । जब चैतन्य महाप्रभु उस सभा में आये तो वे मंच पर नहीं बैठे बल्कि जहाँ पर सब लोग अपने पैर धोते थे, उस नाली के पास महाप्रभु जाकर बैठ गये । उनकी ऐसी दीनता का उनके विरोधी प्रकाशानन्दजी पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे मंच से उतरकर महाप्रभु के पास आये और उनसे बोले कि आप सन्यासी होकर नीचे क्यों बैठे हैं, मंच पर चलकर बैठिये । महाप्रभु ने कहा कि मैं तो बहुत ही छोटा हूँ और छोटे सम्प्रदाय का सन्यासी हूँ, मैं आप लोगों के साथ मंच पर बैठने का अधिकारी नहीं हूँ । इस तरह महाप्रभु ने अपने आचरण के द्वारा दीनता की शिक्षा दी कि कैसे छोटा बना जाता है । श्रीचैतन्य महाप्रभु के गुण तो अनन्त हैं, थोड़े से शब्दों में उनका वर्णन ही नहीं किया जा सकता है । उनका अवतार प्रेमावतार था । उन्होंने ऐसी लड़ाई लड़ी कि जिसे समझना बहुत कठिन है । सच्चे सन्त उसी लड़ाई को लड़ते हैं जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है कि कलियुग के दोषों को जीतने के लिए भगवान् का नाम ही सबसे बड़ा हथियार है । कलियुग में अनेक प्रकार के पाप,

दुराचार बढ़ते हैं । उनसे लड़ने के लिए सैन्य शक्ति (military power) या आणविक शक्ति (atomic power) काम नहीं देगी । उसको जीतने के लिए भगवान् का नाम ही काम देगा । इसीलिए महाप्रभु ने भगवन्नाम संसार को दिया, उससे कलियुग की शक्ति नष्ट हुई । कलियुग के दोषों को जीतने के लिए ऐटम बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रान बम आदि सब फेल हैं, इसलिए उन्होंने नाम कीर्तन का प्रचार करके सबको भगवन्नाम दिया, पतित समाज का उद्धार किया । श्रीबाबा महाराज ने भी ब्रजवास करते समय श्रीचैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं को श्रीराधा-माधव की आराधना का आधार बनाया । श्रीबाबा अपनी जन्म भूमि प्रयाग से ७० वर्ष पूर्व जब बरसाना आये और मान मन्दिर में अखण्ड वास किया तो उस समय उन्होंने देखा कि आसपास के गाँवों में कीर्तन की ध्वनि सुनायी नहीं पड़ती थी, फिर क्या था, श्री चैतन्य महाप्रभु से प्रेरणा लेते हुए श्रीबाबा ने ब्रजवासियों को लेकर मानपुर गाँव में कीर्तन का प्रारम्भ किया, पूरे गाँव में कृष्ण कीर्तन की धूम मचा दी । विरोधियों ने कीर्तन का बहुत विरोध भी किया किन्तु श्रीबाबा दीनता के साथ किसी विरोध की परवाह किये बिना कीर्तन करते रहे । आगे चलकर श्रीबाबा ने मान मन्दिर को ही अपनी संकीर्तन आराधना का केन्द्र बनाया । वहाँ पर प्रतिदिन रात को आठ बजे से ग्यारह-बारह (११-१२) बजे तक कीर्तन होने लगा और ब्रजवासी श्रीबाबा के कीर्तन में रोजाना शामिल होते थे । इस संकीर्तन में श्रीबाबा एक रास मण्डल पर दो-तीन घंटे तक गोल- गोल बहुत तेज गति से घूमते हुए नृत्य करते थे । इस नृत्य की प्रेरणा भी बाबा ने महाप्रभु से ली क्योंकि चैतन्य चरितामृत में लिखा है कि महाप्रभु संकीर्तन में अलात चकर की तरह बहुत तेज गति से घूमते हुए नृत्य करते थे । उनके संकीर्तन में कई भक्त तो मृदंग बजाते, कई भक्त झांझ बजाते, जिनकी तुमुल ध्वनि से आकाश गूंज उठता । सब भक्तों के बीच में महाप्रभु तीव्र गति के साथ गोलाकार घूमते हुए नृत्य करते थे । इसी प्रकार श्रीबाबा महाराज भी ब्रजवासियों के बीच में बहुत तेज गति से गोलाकार घूमते हुए नृत्य करते थे । उस कीर्तन में बहुत सी ढोलकें, झांझ, ताशा, बेला, घंटे आदि वाद्य बजाये जाते थे, जिनकी ध्वनि कई किलोमीटर तक सुनायी देती थी । महाप्रभु ने नगर कीर्तन के माध्यम से प्रचार किया । उन्हीं के नगर कीर्तन से प्रेरणा लेकर श्रीबाबा ने ब्रज के हजारों गाँवों में प्रभात फेरियाँ चलायीं, जिनमें प्रतिदिन ब्रजवासी अपने गाँवों में ब्रह्म मुहूर्त में जागकर सबेरे चार-पाँच बजे नगर कीर्तन करते हैं । इसी तरह जिस प्रकार गौरांग महाप्रभु ने अपने अनुयायी सन्तों विशेषकर श्रीरूप-सनातन आदि छः गोस्वामियों को अखण्ड ब्रजवास करते हुए ब्रज धाम की सेवा की आज्ञा दी, ब्रज के लुप्त हो रहे तीर्थों के संरक्षण की आज्ञा दी और उन्होंने उनकी आज्ञा का पालन किया । इसी प्रकार श्रीबाबा महाराज ने भी ब्रज भूमि के कुण्डों, पर्वतों और वनों का संरक्षण करते हुए अद्भुत धाम सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया । महाप्रभु ने कभी धन का संग्रह नहीं किया और निष्किंचन वृत्ति के साथ भक्ति करने का उपदेश दिया । उन्हीं की शिक्षा को मानते हुए श्रीबाबा महाराज ने भी कभी धन का संग्रह नहीं किया और निष्किंचन वृत्ति से ही ब्रजवासियों की भिक्षा माँगते हुए जीवन यापन किया । महाप्रभु ने दीनता को भजन की आधार शिला बताया और स्वयं भी दैन्य का आचरण करते हुए आराधना की । उन्हीं के सिद्धान्त को अपनाते हुए श्रीबाबा महाराज भी दैन्य को भक्ति का आधार मानते हैं । श्रीबाबा के हृदय में अद्भुत दैन्य है । दैन्य के कारण ही श्रीबाबा ने आज तक किसी को अपना शिष्य-शिष्या नहीं बनाया । वे कभी अपने को साधु-सन्त भी नहीं मानते हैं बल्कि ब्रजवासियों का सेवक मानते हैं और बहुत ही छोटा समझते हैं । महाप्रभु का सिद्धान्त - तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः अर्थात् अपने को घास के तिनके से भी नीचा समझना, वृक्ष से भी अधिक सहनशील बनना, स्वयं सम्मान की इच्छा न करते हुए दूसरों को सम्मान देते हुए सदा कीर्तन करते रहना – यह श्रीबाबा महाराज के रोम-रोम में बसा हुआ है । उन्होंने स्वयं को सबसे छोटा माना, सहनशीलता तो इतनी कि अपने से द्वेष करने वालों से भी उन्होंने प्रेम किया, उनका हित किया, प्राणघातक हमला करने वालों को भी प्रेम से क्षमा कर दिया, स्वयं सम्मान की इच्छा न करके वे सदा दूसरों को सम्मान देते रहते हैं । सभी कल्याणकारी कार्यों का, बड़ी-बड़ी सेवाओं का कर्त्ता स्वयं को न मानकर दूसरों को ही वे इसका श्रेय देते हैं ।

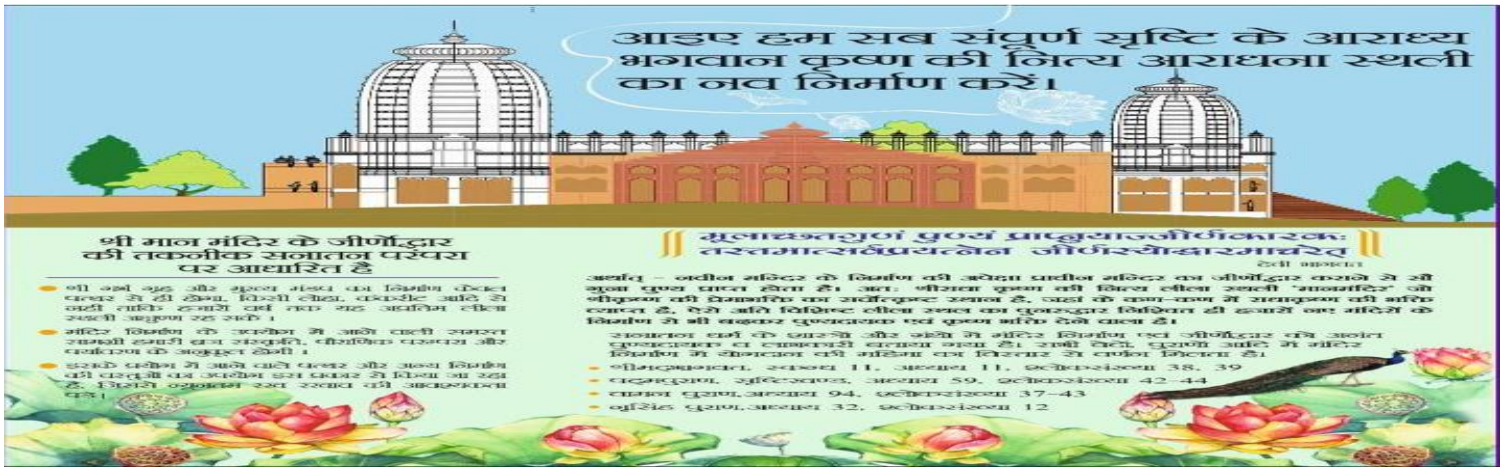

ब्रज की प्राचीन मान लीला स्थली श्री मान मंदिर के जीर्णोंउद्धार कार्य में सेवा देने वाले दानदाताओं की सूची

S.No.	Name of Donor	Amount
1	Kiran Devi Swarnkar	5500000.00
2	Smt. Kantadevi Sunderlal Daga Charity foundation	3000000.00
3	Arun Kumar Maheshwari	1100000.00
4	Radhika Navin Mehta	1000000.00
5	Damodar Industries Ltd,	500000.00
6	Sakshi Rajesh Manwani	500000.00
7	Nand Kishore	434500.00
8	C.K.Rathi	400000.00
9	Gagiya Pababhai Dadubhai	375000.00
10	Rekha Yadav	350000.00
11	Apollo Digitex Private Limited	251000.00
12	Jadia Bhavna Madhusudan	251000.00
13	Gwal Das Karnani	250000.00
14	Indra Kumar Bagri	250000.00
15	Oasis Securities Ltd	250000.00
16	Shakuntala Karnani	250000.00
17	Shri Narayan Upadhyay	211000.00
18	Gunjan Rathi	200000.00
19	Niranjan Dev Rajnin	200000.00
20	Prabhat Kumar Rakheja	200000.00
21	Pushpa Devi	200000.00
22	S & S EXPORT	200000.00
23	Prem Prakash Gupta	155000.00
24	Manoj Kumar	150000.00
33	Rathi Udyog, Mahesh & Venu Rathi	150000.00
52	Shashwat Aswa	130000.00
25	Shri Malook Peeth Seva Sansthan Nyas	111111.00
26	Dinesh Kumar Agarwal	101000.00
27	Manish Kumar Bagga	100101.00
28	Echem Corp	100000.00
29	Gopi Chand Jaiswal	100000.00
30	Harish Kumar	100000.00
31	Harsh Singhla	100000.00
32	Raghav Agarwala (Rathi Udhyog)	100000.00
34	Shri Puran Dass Taneja	100000.00
35	Smt. Ganga Chandola	100000.00
36	Vinay Kharbanda	100000.00
37	Gaurav	51111.00
38	Khetan Corru Case Private Limited	51000.00
39	Madan Lal Bhasin	51000.00
40	Mahit Pradiy	51000.00
41	Manoj Kumar Ruia	51000.00
42	Ram Mohan Goyal (Monika Goyal)	51000.00
43	RJ Patel Cheritable Trust	51000.00
44	Vijay Jhunjhunwala	51000.00
45	Vijendra Singh	51000.00
46	Shyam Pariwar (Mumbai)	51000.00
47	Durgesh Chawla	50000.00
48	Janak Rai Gandhi	50000.00
49	Rabindranath Sahoo	50000.00
50	Rajni Lakhanpal	50000.00
51	Sushma Arora	50000.00
52	Hitesh Baheti	50000.00
53	Vivek Bagree	50000.00

क्र.सं.	दिनाँक	दिन	तिथि	पड़ाव	दर्शनीय स्थल	कि.मी.
1	15.10.2024	मंगलवार	त्रयोदशी / प्रदोष व्रत	बरसाना	संकल्प– प्रातः यात्रा पड़ाव, श्रीमाताजी गौशाला, सूर्य कुण्ड डभाला, नौबारी–चौबारी, रतनकुण्ड, श्यामशिला, श्रीमाताजी गौशाला, पड़ाव	9
2	16.10.2024	बुधवार	चतुर्दशी / शरद पूर्णिमा व्रत	बरसाना	मानगढ, कुशलबिहारी जी, श्रीजी मन्दिर, दानगढ़, मयूरकुटी, सांकरीखोर, विलासगढ़, महेश्वरीसर, दोहनी कुण्ड, पड़ाव	11
3	17.10.2024	गुरुवार	पूर्णिमा	बरसाना	ब्याहुला 2 Km, देह कुण्ड 1 Km, ललिता अटा, ऊँचागाँव 1 Km, दाऊजी दर्शन 1 Km, सोनोखर 1 Km, पीली पोखर 0.5 Km, भानोखर 2 Km, चित्रासखी, बिहारी जी, दोहनी कुण्ड, चिकसौली 3 Km, मानपुर, पड़ाव 0.5 Km	12
4	18.10.2024	शुक्रवार	प्रतिपदा	पिसाया	ब्रजेश्वर महादेव, रावड़वन, पाडरवन 5 Km, करहला 3 Km, चम्पकलता 1 Km, घमण्डदेवाचार्यजी 0.5 Km, बज्रनाभजी समाधि, पिसाया 3 Km, पड़ाव	12.5
5	19.10.2024	शनिवार	द्वितीया	नन्दगाँव	लौधोली 1 Km, इन्दुलेखा, अंजनशिला, आंजनौंख 2 Km, विह्वल कुण्ड 3 Km, राधारमण जी दर्शन 1 Km, संकेतदेवी, बैठकजी, दोमीलवन 2 Km, उद्धवक्यारी, नन्दगाँव 4 Km, पड़ाव	13
6	20.10.2024	रविवार	तृतीया / करवाचौथ	नन्दगाँव	पावन सरोवर, मयूर कुण्ड, आशेश्वर महादेव, टेरकदम्ब, कृष्ण कुण्ड, ललिता कुण्ड, यशोदा कुण्ड, नन्द खिरक, चरण पहाड़ी, पनिहारी कुण्ड, वृन्दादेवी, पड़ाव	11
7	21.10.2024	सोमवार	पंचमी	सिरथरा	कोकिलावन 5 Km, पाण्डव गंगा 1 Km, दाऊजी मन्दिर बठैन 2 Km, छोटी बठैन 1 Km, चरण पहाड़ी 2 Km, सिरथरा रोड़, पड़ाव 5 Km	16
8	22.10.2024	मंगलवार	षष्ठी	होडलघड़ी	मोहनजी मन्दिर 1.8 Km, दुर्वासा, रासवन (रासौली) 5.7 Km, ब्रजभूषण मन्दिर 3 Km, गिरवरदास मन्दिर, परमहंस व कुठा बाबा मन्दिर, लालपुर 2.5 Km, होडलघड़ी, पड़ाव 3 Km	16
9	23.10.2024	बुधवार	सप्तमी	भिडूकी	होडल सती कुण्ड 3.5 Km, पैंगलतु 5 Km, सिद्धबाबा मन्दिर, भिडूकी, पड़ाव 4 Km	12.5
10	24.10.2024	गुरुवार	अहोई अष्टमी	धानौता	बांसवा 2.8 Km, विष्णु मन्दिर (झीरसागर) 0.5 Km, प्रह्लाद मन्दिर 0.5 Km, झीरसागर व शेषसाई मन्दिर 3.5 Km, नन्दनवन, बरखा 2.5 Km, धानौता 5 Km, पड़ाव 0.5 Km	15.3
11	25.10.2024	शुक्रवार	नवमी	उझानी	रूपनगर 1 Km, बुधगढ़ी 0.5 Km, फूलगढ़ी 0.5 Km, शेरनगर 0.5 Km, मझोई 2 Km, बड़हा 4 Km, रामपुर 2 Km, उझानी 2 Km, पड़ाव	12.5
12	26.10.2024	शनिवार	दशमी	बिहारवन	बसई, मौनीबाबा मन्दिर 3 Km, शेरगढ़ खेलनवन 4 Km, परिक्रमा 2 Km, ऐंचा दाऊजी 3 Km, बिहारवन 3 Km, पड़ाव	15
13	27.10.2024	रविवार	एकादशी	गांगरौल	भीमागढ़ी 1.5 Km, कासरौट 1.5 Km, अक्षयवट 1 Km, तपोवन 1 Km, चीरघाट, महाप्रभुजी की बैठक, कात्यायनी मन्दिर 3.5 Km, गांगरौल 2 Km, पड़ाव	10.5
14	28.10.2024	सोमवार	एकादशी व्रत सर्वेषाम	बालहरा	नन्दघाट 3 Km, बसई 3.5 Km, मई 2 Km, सेई 3 Km, बछवन 1 Km, बालहरा राधारासबिहारी मन्दिर (रासौली) 2.5 Km, यमुनाजी पड़ाव	15

15	29.10.2024	मंगलवार	द्वादशी	भाण्डीरवन	यमुनापार, बंशीवट, भाण्डीरवन पड़ाव	7
16	30.10.2024	बुधवार	त्रयोदशी / धनतेरस	बेलवन	माँट 3 Km, बेगमपुर 5 Km, गाजीपुर 2 Km, बेलवन महालक्ष्मी मन्दिर 1 Km, पड़ाव	11
17	31.10.2024	गुरुवार	चतुर्दशी	वृन्दावन	राधारानी मानसरोवर 3 Km, पानीगाँव 4 Km, दुर्वासाजी, जगन्नाथ घाट 4 Km, पड़ाव	11
18	01.11.2024	शुक्रवार	अमावस्या / **दीपावली**	वृन्दावन	वृन्दावन परिक्रमा एवं दर्शन	13
19	02.11.2024	शनिवार	प्रतिपदा / अन्नकूट / गोवर्धन पूजन	कारव	पानीगाँव पुल 4 Km, यशोदा कुण्ड 2.5 Km, मावली 0.5 Km, लोहवन 4 Km, नगलाधीना 2 Km, सिहोरा 3 Km, कारव पड़ाव 1 Km	17
20	03.11.2024	रविवार	यम द्वितीया / भाई दूज	दाऊजी	कारव 3 Km, बन्दी–आनन्दी 4.5 Km, छौली 3 Km, बल्देव दाऊजी दर्शन 2.5 Km, पड़ाव 1.5 Km	14.5
21	04.11.2024	सोमवार	तृतीया	चिन्ताहरण	दाऊजी 1.5 Km, खंडोरा 3 Km, हवेली 1 Km, बसई 2 Km, हरदसा 1.5 Km, ऋणमोचन 2 Km, चिन्ताहरण 2 Km	13
22	05.11.2024	मंगलवार	चतुर्थी	रावल	ब्रह्माण्डघाट 1 Km, महावन चौरासी खम्भा 1.5 Km, रमणरेती 2 Km, रसखान समाधि 0.5 Km, गोप तलैया 0.5 Km, गोकुल 1 Km, चन्द्रावली 3.5 Km, राधारानी रावल पड़ाव 2 Km	12
23	06.11.2024	बुधवार	पंचमी	महोली / मधुवन	लक्ष्मीनगर यमुना पुल 5 Km, रंगजी मन्दिर 3 Km, महोली रोड़, पड़ाव 5 Km	13
24	07.11.2024	गुरुवार	सूर्य षष्ठी	नौगाँव	ध्रुवटीला, कृष्णकुण्ड, मधुवन, तालवन 4 Km, कुमुदवन 3.5 Km, नौगाँव 2.5 Km, पड़ाव	11
25	08.11.2024	शुक्रवार	सप्तमी	बाटी	सतोहा शान्तनु कुण्ड 4 Km, बाकलपुर 1 Km, गणेशरा 3 Km, फेंचरी 4 Km, बाटी 3 Km, पड़ाव	14
26	09.11.2024	शनिवार	गोपाष्टमी	मुखराई	राल 4 Km, जुल्हेंदी सूर्य कुण्ड 4 Km, बसौती, मुखराई मोड़, मुखराई 5 Km, पड़ाव	13
27	10.11.2024	रविवार	अक्षय नवमी	पूँछरी	जमुनावता 3 Km, पारसौली 2 Km, चन्द्रसरोवर 1 Km, पैठा 3.5 Km, पूँछरी 5 Km, पड़ाव	14.5
28	11.11.2024	सोमवार	दशमी	पूँछरी	गोवर्धन परिक्रमा	21
29	12.11.2024	मंगलवार	देवोत्थान एकादशी / तुलसी विवाह	ऊमरा	श्यामढाक 1.8 Km, सूर्य कुण्ड सामई 3 Km, ऊमरा 3.5 Km, पड़ाव 0.5 Km	8.8
30	13.11.2024	बुधवार	द्वादशी	टौंकौली	नगला फौजदार 1.5 Km, नगला चाहर 1 Km, डीग 5.5 Km, राधाकृष्ण मन्दिर राधानगरी 6 Km, टौंकौली, पड़ाव 1 Km	15
31	14.11.2024	गुरुवार	त्रयोदशी / बैकुण्ठ चतुर्दशी	खोह	गुहाना 2 Km, बूढ़ेबद्री 2 Km, जड़खोर 2.5 Km, जड़खोर गुफा, सौगंधनी शिला, पहलवाड़ा 1.5 Km, खोह 3.5 Km	11.5
32	15.11.2024	शुक्रवार	कार्तिक पूर्णिमा	आदिबद्री	नीलघाटी, कदम्बखण्डी, अलीपुर, हिरनखोई, देवसरोवर, गंगोत्री, यमुनोत्री, हरिद्वार, हर की पौड़ी, हरिद्वार, आदिबद्री	10
33	16.11.2024	शनिवार	प्रतिपदा / निम्बार्क जयंती	केदारनाथ	अलीपुर 1 Km, पसोपा 3 Km, बरौली–धाऊ 2.5 Km, केदारनाथ 3.5 Km	10
34	17.11.2024	रविवार	द्वितीया	कामां	लेहसर 5 Km, चरण पहाड़ी 3 Km, लुक–लुक कुण्ड 2 Km, गया कुण्ड 2.5 Km, कामां पड़ाव 1 Km	13.5
35	18.11.2024	सोमवार	तृतीया	कामां	परिक्रमा व दर्शन काम्यवन	10
36	19.11.2024	मंगलवार	चतुर्थी	बरसाना	कनवाड़ा 2.5 Km, कदम्बखण्डी 2.5 Km, सुनहरा 2.5 Km, बरसाना 2 Km, श्रीमानमन्दिर 2.5 Km	13

1. यात्रियों को दोनों समय भोजन, प्रातःकाल चाय औषधियाँ एवं आवास व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क है। 2. वाहन द्वारा यात्रा करने वाले एवं निजी टैण्ट की सुविधा वाले को शुल्क देय है। 3. यात्रा में ठाकुरजी के डोले के पीछे ही चलना है, आगे जाना निषेध है। 4. यात्रा में किसी भी प्रकार का नशा, धूम्रपान आदि करना पूर्णतः वर्जित है। बिस्तर, जमीन की सीलन को रोकने के लिए मोमजामा, टॉर्च एवं जाड़े के कपड़े भी लाएँ। 5. यात्रियों को अपने साथ थाली, लोटा, बाल्टी, कटोरी, गिलास आदि लाना आवश्यक है। 6. परिस्थितिवश कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है। 7. यात्राकाल में मौन रहें अथवा कीर्तन करें यही यात्रा का शुल्क है। 8. वृद्ध यात्री अपने साथ एक सहायक अवश्य लाएँ। **9. प्रत्येक यात्री अपने साथ आधार कार्ड / पहचान पत्र की फोटोकॉपी अवश्य लाएँ।** 10. यात्रा में दान देने के इच्छुक यात्री किसी व्यक्ति को न देकर यात्रा कार्यालय में देकर रसीद प्राप्त करें अथवा गोलक में डालें।

– विशेष सूचना –

धाम सेवा के बिना यात्रा, यात्रा ही नहीं है। जो धाम सेवक है, वही सच्चा यात्री है। यमुना जी को फिर से धाम में लाना है, ये सच्ची धाम सेवा है। इसके लिए सभी यात्री यमुनाजी को धाम में लाने का संकल्प व प्रयत्न अवश्य करें।

गौ-सेवा में आवश्यक सावधानियाँ

गौशाला समस्त देवों का निवास स्थान है । उसे अपने शयन कक्ष की तरह साफ़-सुथरा रखें ।

(पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड - ४८/११२)

गौशाला में चोर, कुत्तों आदि का भय नहीं होना चाहिए । इसका ध्यान रखना चाहिए कि वहाँ सर्दी, तेज हवा और धूल का प्रकोप न होने पाए । वहाँ से गौबर, गौमूत्र, बचा-खुचा घास चारा और कूड़ा-करकट समय-समय पर हटाते रहना चाहिये । **(पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड, ४८/१११, ११२)**

गौशाला में मक्खी, मच्छर, डाँस आदि न होने पायें, इस कारण वहाँ प्रतिदिन सुगन्धित धूनी करनी चाहिए । जो गौपालक ऐसा नहीं करता, वह मक्षिकालीन नरक में जाता है; उस नरक की भयानक मक्खियाँ उसकी त्वचा को फाड़कर उसका रक्तपान करती हैं । **(देवीपुराण)**

सूखे चूने से गौशाला को साफ़ रखें । जूठन, कफ, थूक, मूत्र, विष्ठा आदि को गौशाला में न पड़ा रहने दें । रात्रि में गौशाला में दीपक जलायें तथा वहाँ पौराणिक कथायें सुने-सुनाएँ । वहाँ गर्मी की ऋतु में पेड़ों की ठंडी छाया रहनी चाहिए । जाड़े की ऋतु में गौशाला गरम रहनी चाहिए तथा उसकी फर्श सूखी (कीचड़ रहित) रहनी चाहिए । वर्षा और शिशिर की ऋतुओं में गौशाला थोड़ी कम गरम रहनी चाहिए, इसका ध्यान रखना चाहिये कि इन दोनों ऋतुओं में तेज हवा गौशाला के अन्दर न आने पाए । **(ब्रह्मपुराण)**

गौशाला सुदृढ़, विस्तीर्ण तथा समान स्थल वाली होनी चाहिए । उसमें तेज ठण्डी हवा तथा तेज धूप की पूरी रुकावट होनी चाहिए । फर्श को कोमल बनाने के लिए उस पर बालू बिछा देनी चहिये । शरीर की खुजलाहट मिटाने के लिए उसमें बहुत-से स्तम्भ होने चाहिए । खूँटों का ऊपरी भाग नुकीला नहीं होना चाहिए तथा उनमें मुलायम रस्सियाँ लगी रहनी चाहिये । मच्छर आदि हटाने के लिए गौशाला में धुएँ का प्रबन्ध होना चाहिए । वहाँ गायों के बैठने के लिए पर्याप्त स्थान होना चाहिए । गायों के पानी पीने के लिए निकट ही कुण्ड-जलाशय आदि होने चाहिए । सर्दी, तेज धूप आदि से गायों को बचाने के लिए पर्दों तथा छाया की व्यवस्था होनी चाहिए । **(स्कन्दपुराण)**
गौशाला साफ़-सुथरी होनी चाहिए । कूड़ा-करकट, झाड़, भूसी, मिट्टी, कीचड़, गौमूत्र, गोमय, मल-मूत्र आदि गौशाला के फर्श पर पड़े नहीं रहने देना चाहिए । संध्या के समय दीपक की रोशनी से प्रकाशित ऐसी साफ़-सुथरी गौशाला में भगवती लक्ष्मी का स्थायी निवास रहता है । **(ऋषि पराशर कृत कृषि संग्रह)**

जब गायों को स्नान कराने के लिए पानी में उतारना हो तो उन्हें ऐसे स्थान पर उतारें, जहाँ बराबर तथा चौड़े घाट बने हों, दलदल न हो और मगर इत्यादि जलचर हिंसक जीवों का भय न हो । **(कौटिलीय अर्थशास्त्र, गोऽध्यक्ष प्रकरण)**

गौ-आहार

स्वयं भोजन करने से पहले गायों को घास-चारा और आवश्यकतानुसार नमक दें । **(आदित्य पुराण)**
प्रतिदिन गायों को गो-ग्रास दें, जो मनुष्य ऐसा करता है, उसने मानो अग्निहोत्र कर लिया, पितरों को तृप्त कर दिया और देव-पूजा सम्पन्न कर ली । **(स्कन्दपुराण – आ., रेवा., १३/६८)**

गायों को प्रातःकाल नमक तथा उसके बाद ठण्डा पानी और घास देना चाहिए । यह सुनिश्चित कर लें कि दुर्दिन, विप्लव, हलचल आदि के प्रतिकूल समय में भी गायों को ठण्डा पानी और घास मिलते रहें । **(ब्रह्मपुराण)**
यदि गायें भूखी-प्यासी रहती हैं तो वे उत्पीड़क के सम्पूर्ण वंश को नष्ट कर सकती हैं । **(महाभारत, अनुशासन पर्व, ६९/१०)**

गौ-दुग्ध-दोहन

दो माह तक की आयु के गो-वत्सों को माँ का (चारों थनों का) पूरा दूध देना चाहिए । तीसरे महीने से केवल दो थन दुहने चाहिए, शेष दूध गो-वत्सों के लिए छोड़ देना चाहिये । चौथे महीने से तीन थन दुहने चाहिए । **(ब्रह्मपुराण)**

दूध दुहते समय गाय को कष्ट होता हो तो गोपालक को दुहने का हठ नहीं करना चाहिये । आषाढ़, आश्विन और पौष महीनों की पूर्णिमा को दूध नहीं दुहना चाहिये ।

बछड़े की खाल में भूसा भरकर उसकी सहायता से दूध नहीं दुहना चाहिए । जो ऐसा करता है, वह सदा क्षुधार्त रहता है । **(देवीपुराण)**

वर्षा, शरद तथा हेमन्त की ऋतुओं में गायों को प्रातः तथा सायं दो बार दुहना चाहिये । शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्म की ऋतुओं में उन्हें एक बार दुहना चाहिए । एक से अधिक बार दुहने वाले दोहक का अँगूठा काट दिया जाना चाहिए । यदि किसी दिन दोहक ठीक समय पर गाय न दुहे तो उसे उस दिन का वेतन न दिया जाए । **(कौटिलीय अर्थशास्त्र, गोऽध्यक्ष प्रकरण)**

गौरक्षा

निरपराध तथा अवध्य गौ का वध न करो । यदि तुम हमारी गौ का वध करते हो तो हम सीसे की गोलियों से तुम्हें बींध देंगे । मूढ़ याजक ..... गौ के अवयवों से यजन करते हैं । **(ऋग्वेद – ८/१०/१५, १/१६/४, ७/५/५)**

जो मनुष्य माँस बेचने के लिए गाय का वध करते हैं या गौमाँस खाते हैं अथवा स्वार्थवश कसाई को गाय का वध करने की सलाह देते हैं, वे गौ के शरीर में जितने रोयें होते हैं, उतने वर्षों तक घोर नरक में पड़े रहते हैं ।

(महाभारत, अनुशासन पर्व - ७४/३,४)

जो मनुष्य सिंह, बाघ के या किसी अन्य भय से डरी हुई, कीचड़ में धँसी हुई या जल में डूबती हुई गाय को बचाता है, वह एक कल्प तक स्वर्ग सुख का भोग करता है । **(हेमाद्रि)**

गोपालकों को कम आयु के गौ-वत्सों तथा रोगी और वृद्ध गायों की विशेष देखभाल करनी चाहिए । शत्रुओं से गायों की रक्षा करने के लिए एक निश्चित अवधि के लिए सरकारी बाड़े में उन्हें रख देना चाहिए । इसके बदले में गौपालकों को अपनी आय का दसवाँ हिस्सा सरकार को देना चाहिए । चुरायी गयी, अपने गिरोह से बिछुड जाने वाली, अपना रास्ता भूल जाने वाली, गायों के दूसरे झुण्ड में मिल जाने वाली, जल-प्रवाह में बह जाने वाली, किसी भारी वस्तु (यथा वृक्ष, शहतीर आदि) से दब जाने वाली, कीचड़ में फँसी हुई, गड्ढों में गिरी हुई, सर्प दंश से पीड़ित और आग से जल जाने वाली गायों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए । यदि गो पालक इन विपदाओं के लिए उत्तरदायी पाए जाएँ तो उन्हें इस हानि की पूर्ति करना चाहिए । जंगली पशुओं द्वारा घायल गायों, रोगी और बूढ़ी गायों तथा वृद्धावस्था के कारण मर जाने वाली गायों की सूचना गो-पालकों द्वारा सरकारी अधिकारियों/सम्बन्धित व्यक्तियों को दी जानी चाहिए । यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनसे प्रभावित पशुओं का पूरा मूल्य वसूल किया जाना चाहिए । यदि कोई गोपालक चुराई गयी गायों को चोरों से छुडा लेता है तो उसे पुरस्कृत किया जाना चाहिए । जो मनुष्य गायों को चुराता है या दूसरों को उन्हें चुराने के लिए प्रोत्साहित करता है, उसे प्राणदण्ड दिया जाना चाहिए । गौ-पालकों को अपनी गायों को ऐसे स्थानों पर चराना चाहिए, जहाँ शिकारियों, चोरों, बहेलियों और हिंसक पशुओं का भय न हो तथा जहाँ ऋतुओं का प्रतिकूल प्रभाव न पड़ता हो । गायों के गले में लोहे के घंटे बाँध दिए जाने चाहिए ताकि उनकी आवाज सुनकर साँप आदि भाग जायें । **(कौटिलीय अर्थशास्त्र, गोऽध्यक्ष प्रकरण)**

जो मनुष्य गौ माँस खाते हैं, वे अपनी माता का माँस खाते हैं । **(लोकनीति, बौद्ध साहित्य)**

गौ का माँस या उसका रक्त नहीं वरन् उनसे तुम्हारा परहेज ही अल्लाह तक पहुँचता है । **(कुरान, सूर-ए-हज)**

जो बैल को काटता है, वह उस आदमी की तरह है, जो मनुष्य को मारता है । **(बाब ४६)**

मुकुट पर वारी जाऊँ, नागर नंदा ।
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यों तारन में चन्दा ॥
सब सखियन में राधा बड़ी हैं, ज्यों नदियन में गंगा ।
सब भगतन में भरत बड़े हैं, जोधन में हनुमंता ॥
पैठ पताल कालीनाग नाथ्यौ, फन फन निरत करंदा ।
'चन्द्रसखी' भज़ु बालकृष्ण छबि, काटो जमके फंदा ॥

!! श्री सुरभ्यै नमः !!
!! श्री मानविहारिणे नमः !!
!! श्री हरये नमः !!
श्री माताजी गौशाला
श्री माताजी गौशाला
श्री राधारानी के लाड़ले
विरक्त संत "पद्मश्री"
परम पूज्य
श्री रमेश बाबा जी महाराज
श्री गो भक्तमाल कथा
एवं
श्री प्रिया लालजू विवाह
महोत्सव
गुरूवार 3 अक्टूबर से
शुक्रवार 11 अक्टूबर 2024
समयः सायं 3 से 6 बजे तक
उत्सव स्थल
श्री माताजी गौशाला
बरसाना, मथुरा
अधिक जानकारी
हेतु सम्पर्क सूत्रः
9927916699
9991990404
8057994000
अधिक जानकारी के लिए
QR CODE स्कैन करें।
व्यासाचार्य
जगद्गुरु द्वाराचार्य श्रीअग्र-मलूक पीठाधीश्वर स्वामी
श्री राजेंद्रदास देवाचार्य जी महाराज

Live
गौ आरती
श्री माताजी गौशाला
बरसाना
Shri Mataji Gaushala

!! श्री सुरभ्यै नमः !!

!! श्री मानविहारिणे नमः !!

!! श्री हरये नमः !!

श्री माताजी गौशाला

श्री गो भक्तमाल कथा

एवं

श्री प्रिया लालजी विवाह

महोत्सव

गुरूवार 3 अक्टूबर से शुक्रवार 11 अक्टूबर 2024

समय : सायं 3 से 6 बजे तक

उत्सव स्थल

श्री माताजी गौशाला

बरसाना मथुरा

पावन सान्निध्य

श्री राधारानी के लाड़ले

विरक्त संत "पद्मश्री"

परम पूज्य

श्री रमेश बाबा जी महाराज

व्यासाचार्य

जगद्गुरु द्वाराचार्य श्रीअग्र-मलूक पीठाधीश्वर स्वामी

श्री राजेंद्रदास देवाचार्य जी महाराज

!! जय गो माता - जय गोपाल !!

श्री प्रिया लालजी विवाह

महोत्सव

09 अक्टूबर 2024	10 अक्टूबर 2024	11 अक्टूबर 2024
तिलकोत्सव, हल्दी मेंहदी, गोदभराई	लालजी घुड़चढ़ी बारात आगमन जनमासा बारात विश्राम	विवाह उत्सव

विवाह स्थल

श्री माताजी गौशाला, बरसाना मथुरा

आयोजन गुरूवार 3 से शुक्रवार 11 अक्टूबर तक सम्पन्न होगा।

कृपया अपने आगमन को सुनिश्चित कर सूचित अवश्य करें जिसमें यथा संभव व्यवस्था हो सके।

कथा का सीधा प्रसारण YouTube SHRI MATAJI GAUVANSH SEWA SANSTHAN

!! जय गो माता - जय गोपाल !!

परम पूज्य

श्री रमेश बाबा जी महाराज

द्वारा संचालित

श्री माताजी गौशाला के सेवा प्रकल्प

आयोजक :

श्री माताजी गौशाला

मानपुर, बरसाना (मथुरा)

(श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट)

www.matajigaushala.org

अधिक जानकारी के लिए QR CODE स्कैन करें।

सम्पर्क सूत्र: +91 9927916699, +91 9991990404, +91 8057994000

विशेष सहयोगी SHYAM METALICS ORE TO METAL श्याम मेटालिक्स फाउनडेशन

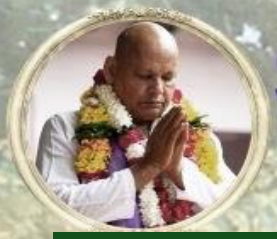

श्री मानमंदिर

प्रस्तावित पुनरुद्धार रेखांकित चित्र

'मान मन्दिर' लीलास्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है इस अति विलक्षण लीलास्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड कर 'धाम-सेवा' का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

ACCOUNT NAME
SHRI MAAN BIHARI
LAL MANDIR SEVA

ACCOUNT NUMBER: **59109927338666**
IFSC CODE: **HDFC0000268**
BANK: **HDFC BANK LTD**
BRANCH: **BSA COLLEGE, MATHURA**
संपर्क :9927338666
www.maanmandir.org

आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

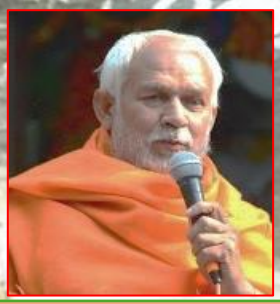

कार्यकारी अध्यक्ष -
राधाकान्त शास्त्री
मोबा. - 9927338666

ACCOUNT NAME
SHRI MAAN BIHARI
LAL MANDIR SEVA
ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट, गह्वरवन, बरसाना (मथुरा)
www.maanmandir.org; संपर्क :9927338666

QR कोड

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित [AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26]